मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
ले
लै
लो
लू
ला
नाम
लु
लं
ली
ल
लि
ला
ल
महामृत्युञ्जय यन्त्र
मई-९२

गुरुदेव जन्मोत्सव–१९९२

२१ अप्रेल १९९२ गुरु जन्मोत्सव गोधरा की भूमि आनन्द नगर के विशाल मैदान में एक महान आयोजन, देश के कोने-कोने से हर प्रान्त से आये शिष्यों का समागम, जय गुरुदेव जय गुरुदेव की गूंजती हुई हर्ष ध्वनि, हर शिष्य मानों दिव्य शक्ति से युक्त होकर चैतन्य हो गया हो, हर एक के चेहरे पर बरस रहा था आनन्द का प्रभा मण्डल, हर शिष्य यहां उपस्थित हुआ था अपने पूज्य गुरुदेव को बधाई देने, इस विशेष दिवस पर उपस्थित होकर अपने समर्पण और गुरु कृपा को धन्यवाद देने, सभी निर्द्वन्द्व निमग्न आनन्द की लहरों में उतरते बढ़ते चेहरों पर मुस्कान लिये निश्चिन्त भाव से हर्ष में डूबे अपनी श्रद्धा का धन्यवाद अर्पित कर रहे थे, हर नजर में चाह थी पूज्य प्रभु के दर्शन कर उनकी वाणी के अमृत पान की। स्थानीय जनता भी चमत्कृत थी पीले वस्त्र धारण किये, गुरु मन्त्र का उत्तरीय ओढ़े, हंसते गाते साधकों का एक विशाल समुदाय देख कर।

इस आयोजन हेतु श्री रतिलाल के० टेलर, श्री प्रवीण जोशी, श्री अर्जुन सिंह, श्री केवल सिंह, श्री नागजी भाई ने पिछले तीन महीनों से दिन-रात एक कर दिया था, सुन्दर आयोजन की उनकी जो आकांक्षा थी वह अपने सम्पूर्ण रूप में साकार हो गयी, कहीं कोई कमी नहीं, कहीं कोई जल्दबाजी नहीं। इन सबने यह सिद्ध कर दिया कि श्रेष्ठ आयोजन के लिए एक दृढ़ इच्छा से कार्य किया जाय तो गुरु कृपा से सब कुछ श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम हो जाता है, हर ओर से सहयोग प्राप्त होता है, धन्य हैं ये सब शिष्य—प्रशान्त भट्ट, जयेश उपेन्द्र भट्ट, मुकेश, जितेन्द्र ने बड़े उत्साह से साधकों की सुख सुविधा हेतु दिन-रात अपने पैरों पर खड़े ही रहे। समारोह का प्रारम्भ तो १९ अप्रैल को ही हो गया था, पूज्य गुरुदेव का स्वागत किया भारतीय जनता पार्टी के गुजरात शाखा के अध्यक्ष लोकसभा सदस्य श्री शंकर सिंह बगेला ने, और उस समय जय जयकार से जो आकाश गुंजायमान हुआ तो गुरुदेव की यह वाणी सत्य सिद्ध हुई कि ये जिन्दा दिल शिष्य हैं कोई अनुयायी नहीं। भाव नगर के भाई प्रवीण देसाई और उनकी बहिन रेखा देसाई ने बधाई संदेश में सौराष्ट्र समाचार दैनिक पत्र में पूरे पृष्ठ का आलेख दिया। कुक्षी मध्य प्रदेश से श्री पूर्णेश चौबे ने पूरे समारोह स्थल को गुरु वाणी के सुन्दर बैनरों से सुसज्जित कर दिया। नृत्य एवं संगीत के साथ साधना का तीन दिन का यह उत्सव वास्तव में ही शिष्यों का अलबेला आनन्द उत्सव था, श्री अर्जुन सिंह, श्री केवल सिंह, श्री वीर सिंह, श्री कमलेश ने अपने साथ उत्साही साधकों की टीम लाकर व्यवस्था का कार्य संभाला और जोधपुर से श्री सुभाष शर्मा ने तीन दिन के इस आयोजन की भोजन व्यवस्था का खर्च वहन कर सेवा का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया।

गुरुदेव के आतिथ्य का सुअवसर श्री जगदीश पाठक को प्राप्त हुआ तो वे निहाल हो उठे, उनकी सेवा हर दृष्टि से पूर्ण रही, भोपाल महिला मण्डल ने रजत बांसुरी भेंट की और जगदल पुरके श्री कुशवाहा ने कृष्ण एवं राधा की झांकी नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। पूज्य गुरुदेव ने इस अवसर पर अपने शिष्य समुदाय को गुरुत्व दीक्षा का सुन्दर उपहार भेंट किया जो कि संन्यासियों के लिए भी दुर्लभ है, शक्ति की उच्चता का स्वरूप है तो शिष्य समुदाय धन्य-धन्य हो उठा।

गुजरात के ही इन सब साधकों ने गुरु पूर्णिमा के आयोजन का आग्रह किया है, अब देखिये क्या होता है, जैसा सभी शिष्य चाहेंगे, और गुरुदेव तो अपने शिष्यों के आधीन हैं तो निर्णय भी शिष्यों को ही लेना है। कि गुरु पूर्णिमा का आयोजन कहां किया जाय, यह उत्सव तो शिष्यों के अधिकार का है। ●

वर्ष–१२

अंक–५

मई-१९९२

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर–३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

नमस्ते नाथ भगवान् शिवाय गुरु रूपिणे ।
विद्यावतार संसिद्धयै स्वीकृतोऽनेकविग्रह ।।

विद्या के अवतरण (प्रदान) की सिद्धि के लिए अनेक शरीरों को धारण करने वाले हे नाथ ! हे भगवन् ! गुरु रूप में शिव (आप) को नमस्कार ।

जिंदगी जिंदादिली का नाम है
मुर्दा दिल क्या खाक जीया करते हैं

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ।।
युञ्जनेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ।।

गीता के छठे अध्याय में लिखा यह श्लोक मुझे अत्यन्त प्रिय लगता है, इसमें लिखा है कि उत्तम आनन्द की प्राप्ति योगी को तभी हो सकती है, जिसने अपना मन शान्त कर लिया हो जिसने अपने रजोगुण को पूर्णतः प्राप्त कर उसे शान्त कर लिया हो और जो अपनी क्रियाओं में पाप कर्म से मुक्त हो गया हो । यहां परिभाषाएं अनन्त बन सकती हैं, व्याख्या में हजारों पृष्ठ भरे जा सकते हैं, लेकिन सब बात से अहं प्रश्न यही उत्पन्न होगा कि अनन्त आनन्द क्या है ? और इसकी प्राप्ति कैसे सम्भव है ।

अनन्त आनन्द अनन्त में स्थित कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे पाने के लिए अनन्त काल तक प्रतीक्षा करनी पड़े, प्रयास करना पड़े और यह अनन्त आनन्द जीवन की पूर्णता के पश्चात् मृत्यु के बाद प्राप्त हो । अनन्त आनन्द का तात्पर्य है पूणत्व, और इसके साथ जब परब्रह्म से साक्षात्कार हो जाय और इस साक्षात्यार का प्रारम्भ भीतर से ही करना पड़ता है । योगियों ने अपने-अपने ज्ञान के अनुसार अलग-अलग मार्ग बताये, कुछ ने शारीरिक

शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया तो किसी ने मानसिक शुद्धता की ओर, कुछ शास्त्रों ने शरीर को पीड़ा देने के महत्व को प्रतिपादित किया, तो कुछ शास्त्रों ने प्रेम एवं सौन्दर्य रस के सिद्धान्त पर जोर देते हुए अनन्त आनन्द की प्राप्ति का मार्ग बताया।

यहां साधक और मेरे शिष्य दो बातें मुझसे विशेष रूप ने पूछते हैं, कि जीवन में सुख प्राप्ति का क्या उपाय है, क्या बाधाओं से रहित जीवन ही सुखी जीवन है, तो मैं पूछता हूं कि तुम्हें सुख चाहिए या आनन्द, आनन्द और सुख में आकाश और पाताल का अन्तर है। सुख एकत्र किया जा सकता है, सुख के साधन जुटाये जा सकते हैं, सुख को खरीदने का प्रयास किया जा सकता है, जिससे मन में अहसास हो सकता है कि हम सुख प्राप्ति के लिए कुछ कर रहे हैं, और सुख के साधन हैं,— सुन्दर भवन, श्रेष्ठ वस्त्र, आभूषण, सुन्दर पत्नी, मान-सम्मान, सांसारिक प्रतिष्ठा, इनकी प्राप्ति से आप एक "इल्यूजन" का निर्माण कर सकते हैं कि यह सब साधन मुझे सुख की ओर ले जा रहे हैं, और जब यह सब प्राप्त हो जायेगा तो आनन्द की प्राप्ति हो जायेगी, यहीं प्रधान अन्तर उपस्थित होता है।

आनन्द एक बहता हुआ भाव है, जो हर समय प्राप्त हो सकता है, जिसका नशा शरीर के अंग-अंग में छा जाता है, जो आपके चेहरे पर मुस्कान ला सकता है वही आनन्द भाव है, जब मैं अपने शिष्यों के साथ बैठता हूं, जब अपने शिष्यों को देखता हूं तो मुझे आनन्द की प्राप्ति होती है, और जब शिष्य में भी यही भाव उत्पन्न होता है तो वह सही मार्ग पर जा रहा है, इसका निर्णय शिष्य स्वयं ज्यादा उचित रूप से कर सकते हैं।

जीवन का पूर्ण स्वरूप योग स्वरूप है, कोई अपने जीवन में श्रेष्ठ योग करता है, तो कोई जीवन में मिले, योग को ऋण रूप में परिवर्तित कर उसे समाप्त ही कर देता है, योग का शाब्दिक अर्थ है—जोड़, इसका तात्पर्य है कि आपके पास कुछ है और उसको किसी और के साथ जोड़ देंगे तो यह संख्या बढ़ भी सकती है और यदि ऋणात्मक संख्या के साथ जोड़ करेंगे तो वह घट भी सकती है तथा शून्य भी हो सकती है। जीवन में अपने योग को कुछ बढ़ाना है तो सही दिशा की ओर कदम बढ़ाना पड़ेगा, श्रेष्ठ योग ही आनन्द प्राप्ति का मार्ग है।

योग मार्ग की क्रियाओं को मुख्य रूप से चार भागों में विभजित किया गया है—

१-हठ योग, २-लय योग, ३-मन्त्र योग, ४-राज योग।

यहां मैं मन्त्र योग के बारे में कुछ कहना चाहूंगा—

सर्वे वर्णात्मका मन्त्रास्ते च शक्त्यात्मकाः प्रियाः।
शक्तिस्तु मातृका ज्ञेया सा च ज्ञेया शिवात्मिका॥

सभी मन्त्र वर्णात्मक और शक्ति स्वरूप हैं, मातृका ही शक्ति है और यह शक्ति शिव की है, अतः समस्त मन्त्र साक्षात् शिव शक्ति स्वरूप है। मन्त्र से भाग्य भी बदल जाता है तथा मन्त्र साधना से सभी अभीष्टों की सिद्धि सरलता से की जा सकती है। जो मन्त्र गुरु मुख से प्राप्त हो, उसे अपने श्रवण मार्ग द्वारा सीधे हृदय प्रदेश में विराजमान कर लेना चाहिए। मन्त्र को प्रदान करने का अधिकार केवल गुरु को ही है, इसके पीछे विशेष कारण है, मन्त्र योग से छः सिद्धियां थोड़े ही समय में प्राप्त होती हैं, ये छः सिद्धियां हैं—

१-ऊहः—केवल मन्त्र की साधना कर बिना गुरु ज्ञान उपदेश के अर्थ का ज्ञान होना ऊहः सिद्धि है।
२-शब्द सिद्धि—प्रासंगिक शब्द श्रवण मात्र से मुख्य अर्थ का बोध शब्द सिद्धि है।
३-अध्ययन सिद्धि—गुरु के साधारण उपदेशों से शास्त्रों का बोध होना अध्ययन सिद्धि है।
४-दुःख (विघात) सिद्धि—आधि भौतिक, आधि दैविक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार के दुःखों का शान्त होना।
५-सहृत्प्राप्ति सिद्धि—किसी विशिष्ट व्यक्ति के सम्पर्क से किसी भी प्रकार का लाभ सहृत्प्राप्ति सिद्धि है।
६-दान सिद्धि—विद्वान सिद्ध तपस्वी द्वारा अलौकिक क्रियाओं का ज्ञान, दान सिद्धि है।

केवल मन्त्र साधना से कुछ काल के लिए उपरोक्त सिद्धियां प्राप्त हो सकती हैं, और यही गुरु अपने शिष्य को आगे का मार्ग बताते हैं, जिससे कि उसका मार्ग आगे चल कर रुक नहीं जाय, वह जो सिद्धि प्राप्त कर रहा है, उसमें विकास हो तथा वह गुरु के साथ एकाकार हो सके तथा शिवत्व भाव का वह आनन्द ले सके जिसके लिए ही उसका जन्म हुआ है, यह देह उसने धारण की है।

कहां से प्रारम्भ करें

यह बात जितनी कठिन दिखती है, उतनी कठिन है नहीं इसे ऐसा रूप दे दिया गया है कि सामान्य व्यक्ति यह विचार करने लग गया कि क्या पता मन्त्र से, तन्त्र से क्या हो जायेगा, कहीं सही रूप में नहीं किया गया तो हानि तो नहीं हो जायेगी। वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है, जब एक दिन प्रारम्भ करोगे, दूसरे दिन उसे आगे बढ़ाओगे तो अपने आप कदम बढ़ते चले जाएगे, मन्त्र तथा साधना तो संगीत की भांति हैं, जैसे संगीत को बार-बार सुनोगे तो नया रस नया आनन्द पाओगे, उसी प्रकार साधनात्मक मन्त्र योग, तन्त्र योग की प्रक्रिया में बार-बार दोहराएगें तो एक लय बधेगी और जो आनन्द की प्राप्ति होगी वह खुद ही अपने भीतर अनुभव करोगे जहां तक शुरुआत का प्रश्न है, केवल 'ॐ' मन्त्र से करके तो देखो फिर निरन्तर गुरु मन्त्र का उच्चारण करके तो देखो, क्या अनुभूति प्राप्त होती है।

मैं बार-बार कहता हूं कि कुछ विचार तुम्हें स्वयं करना होगा, स्वयं अपनी सम्यक दृष्टि से अपने आस पास नवीन रूप से पहिचानने की प्रक्रिया प्रारम्भ होगी। तभी तो जीवन को नये अर्थों में जी सकोगे।

और याद रखो कि इस जीवन के मार्ग में कोई किसी की प्रतीक्षा नहीं करता और समय तो सबसे तीव्र गति से बहने वाला है, अतः यदि प्रक्रिया प्रारम्भ करनी है जो कि प्राप्ति की प्रक्रिया है, आनन्द भाव की सृष्टि करनी है, निर्माण करना है तो फिर उसमें देर करना उचित नहीं।

और आज मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि—

आनन्दादेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते,
आनन्देन जातानि जीवन्ति,
आनन्दं प्रत्यभिसंविशन्ति,
आनन्दं ब्रह्मेति व्यजानत्॥

यह तो नव जागरण का आन्दोलन है

सिद्धाश्रम साधक परिवार

जिसके जीवन में कोई चिन्तन नहीं, कोई दर्शन नहीं, कोई सिद्धान्त नहीं उसका जीवन व्यर्थ ही कहा जायेगा। क्या मनुष्य अपने जीवन में केवल पढ़ने-लिखने, नौकरी अथवा व्यापार करने, विवाह कर बच्चे पैदा करने और फिर बुढ़ापा प्राप्त कर मरने के लिए ही उत्पन्न हुआ है? क्या ईश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य को केवल इन साधारण कार्यों के लिए ही बनाया है? यह कार्य तो सृष्टि का लघुतम प्राणी अमोबा से लगा कर सबसे महाकाय प्राणी ह्वेल मछली तक सभी करते हैं, पैदा होते हैं, बड़े होते हैं, अपना परिवार पालने हैं, सन्तान वृद्धि करते हैं और कोई जल्दी, कोई अपनी उम्र पूरी कर समाप्त हो जाते हैं। फिर मनुष्य में और इनमें क्या अन्तर है?

मनुष्य अपने मस्तिष्क में एक विशिष्ट रचना धर्मिता गुण लिये उत्पन्न होता है, यह गुण संरचनात्मक भी हो सकते हैं और विध्वंसात्मक भी, कुछ नई रचनाएं करते हैं मानव जाति के उत्थान के लिए कार्य करते हैं और कुछ अपने मस्तिष्क का उपयोग विनाश के लिए करते हैं। इन दोनों के मध्य में जो कि देखा जाय तो कुल जनसंख्या का ९८ प्रतिशत है अपना जीवन यापन कर अपने गोल घेरे में ही जीवन पूर्ण कर लेते हैं।

युग पुरुष कौन

जब-जब भी एक संक्रान्ति काल विश्व में आता है, तब-तब एक महान आत्मा का उदय होता है, उसे अपने आने की कोई घोषणा नहीं करनी पड़ती, जब सूर्य उदय होता है तो कोई घोषणा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सूर्य के उदय होने के साथ ही रोशनी की पहली किरण फूटती है और फिर धीरे-धीरे उसकी जगमगाहट से सब कुछ आलोकित हो जाता है। राम हों अथवा कृष्ण, महावीर हों अथवा बुद्ध, ईशा हों या सुकरात या मुहम्मद

सभी ने तो मानव जन्म लिया एक मानव की तरह व्यवहार किया और अपने जीवन में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए पूरे विश्व को मार्गदर्शन दिया। इनमें से किसी को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि उनकी पूजा की जाय, उनको समझा जाय। उन्होंने तो अपने कार्यों से ही स्पष्ट कर दिया कि इस मनुष्य जीवन को किन ऊंचाइयों तक ले जाया जा सकता है और जीवन का श्रेष्ठ मार्ग कौन सा है।

वन्दे निखिलेश्वरम्-शिवम्

पूज्य गुरुदेव की महिमा के बारे में लिखना सूर्य को दीया दिखाने के समान है, उनका तो पूरा जीवन गृहस्थ रूप में, संन्यास रूप में और पुनः गृहस्थ रूप में एक विशेष कल्याणकारी भावना हेतु, एक नव चेतना हेतु ही व्यतीत हुआ, जिस प्रकार घने वृक्ष की छाया तले बैठ कर छाया का आनन्द लिया जा सकता है, उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव के वरदहस्त तले उनके जीवन दर्शन तले एक अपार आनन्द का रोम-रोम में अनुभव किया जा सकता है, उस समय तो शब्द आवश्यक नहीं होते, केवल विचारों का शान्त प्रवाह भीतर ही भीतर चलता है, आने वाली पीढ़ियां यह विश्वास नहीं करेंगी कि श्री निखिलेश्वरानन्द जी जैसा महान व्यक्तित्व विचरण करता था और उनके मधुर वचनों का प्रसाद, उनके साथ रहने का आनन्द, उनकी पूजा अर्चना का आनन्द, उनके प्रेम और प्रवचनों का आनन्द एक-दो को नहीं हजारों-लाखों को प्राप्त हुआ था।

सिद्धाश्रम

महान योगियों की तपोभूमि सिद्धाश्रम जहां विश्वामित्र, वशिष्ठ, शंकराचार्य अष्टावक्र, परमावतार बाबा जी, देवहरा बाबा जी, मां आनन्दमयी जैसे महान योगी तपस्वी विश्व कल्याण की भावना से विश्व में आकर पुनः सिद्धाश्रम को प्रस्थान कर गये, वह महान संस्था केवल एक संस्था नहीं अपितु जीवन का दर्शन है, एक सहज आनन्दपूर्ण जीवन की एक क्रिया है।

जिसने अपने स्वयं के शरीर को जीवन की तपस्याओं, साधनाओं, सिद्धियों से तपाया हो, उनकी वाणी में जो आधार होता है वह सीधे हृदय पर चोट करता है, एक नाड़ी चक्र को जाग्रत करता है, मस्तिष्क में नये विचारों और पुराने विचारों के बीच संघर्ष कराता है और हम सबने यह अनुभव किया है कि परम पूज्य गुरुदेव की वाणी सुन कर, केवल उनकी ओर निहार कर।

सिद्धाश्रम केवल एक संस्था नहीं है, यह एक आन्दोलन है, मानव जाति का, उसकी श्रेष्ठता के लिए और उसकी इकाई है एक साधक और वह हैं आप स्वयं, इस इकाई को अन्य इकाइयों के साथ जुड़ कर क्या करना है, और किस प्रकार करना है, इसका निर्णय तो आपको स्वयं लेना होगा।

साधक बनिये—पहला कदम

यह तो आपके जीवन का पहला अध्याय है, साधनात्मक चिन्तन को अपने जीवन में उतार लीजिये और याद रखिये कि आप जो कार्य इस सम्बन्ध में कर रहे हैं, जिसमें आपका व्यवहार, चिन्तन, गुरु भक्ति सभी सम्मिलित है, उसे हजारों लोग सूक्ष्मता से देख रहे हैं, केवल इसे शब्दों से प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है, इसे प्रकट करना है, अपने कार्य से अपने व्यवहार से अपने चिन्तन से और हर समय याद रखना है कि मैं उस पथ पर अग्रसर हूं जिस सिद्धाश्रम महापथ पर महान योगियों के पदचिन्ह अंकित हैं, हो सकता है प्रारम्भ में कुछ असफलता मिले, सांसारिक दृष्टि से उपेक्षा मिले, लेकिन याद रखें कि आपके साथ हिमालय सदृश महान व्यक्तित्व पूज्य गुरुदेव खड़े हैं। आपको केवल अपना कार्य करना है और जब मार्ग निश्चित है तो आगे का ही चिन्तन करना है।

सम्बन्धों में विस्तार कीजिये

परिवार में जिस प्रकार आपके सम्बन्ध जन्म के साथ ही निश्चित हो जाते हैं, उसी प्रकार **सिद्धाश्रम साधक परिवार** भी एक परिवार है, जहां विशेष चिन्तन युक्त एक ही गुरु के विभिन्न शिष्य आपस में मिल बैठ कर चिन्तन करते हैं, इस प्रकार के सम्बन्धों का विस्तार होना आवश्यक है, क्योंकि यही एक ऐसा स्थान है, जहां आप अपना सांसारिक घमण्ड भूल कर शुद्ध चिन्तन प्रारम्भ कर सकते हैं, याद रखिये गुरु भाइयों में जो स्नेह होता है, वह गुरु भक्ति का ही अंग है, इस परिवार में सबको साथ लेना है, केवल एक अलग कोने में बैठ कर चिन्तन करने से कोई लाभ नहीं है। विचारों का आदान-प्रदान, नये सदस्यों की वृद्धि ही तो इस परिवार का मुख्य अंग है, इसमें कम बोलने वाले भी होंगे, कुछ ज्यादा बोलने वाले होंगे, कुछ आलोचक भी होंगे, परिवार का सदस्य बनने के साथ ही आपका कर्त्तव्य है कि सबकी बातों को ध्यान से सुनें, धैर्य के साथ शान्त मन से आलोचनाओं का उत्तर दें तथा विरोधी विचारों वाले व्यक्तियों को भी अपने साथ जोड़ें।

आज ऐसे हजारों सिद्धाश्रम साधक परिवार भारतवर्ष के हर प्रदेश में छोटे-छोटे गांवों में, शहरों में बन रहे हैं, उन्हें भी अनुभूतियां प्राप्त हो रही हैं, उनकी भी श्रद्धा एवं भक्ति उतनी ही है, जितनी यहां गुरु शक्ति पीठ में उपस्थित साधकों की। नींव का पत्थर बनने में ही तो एक श्रद्धा एवं समर्पण है।

आने वाले समय पर विचार कर पूज्य गुरुदेव ने एक विशेष व्यवस्था की है, प्रथम तो यह कि इस संगठन की प्रत्येक इकाई अपने आप में स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करेगी। सभी सदस्य व्यवस्था के लिए मिल कर कार्य करेंगे। केवल व्यवस्था हेतु इकाई अध्यक्ष इत्यादि का सर्व
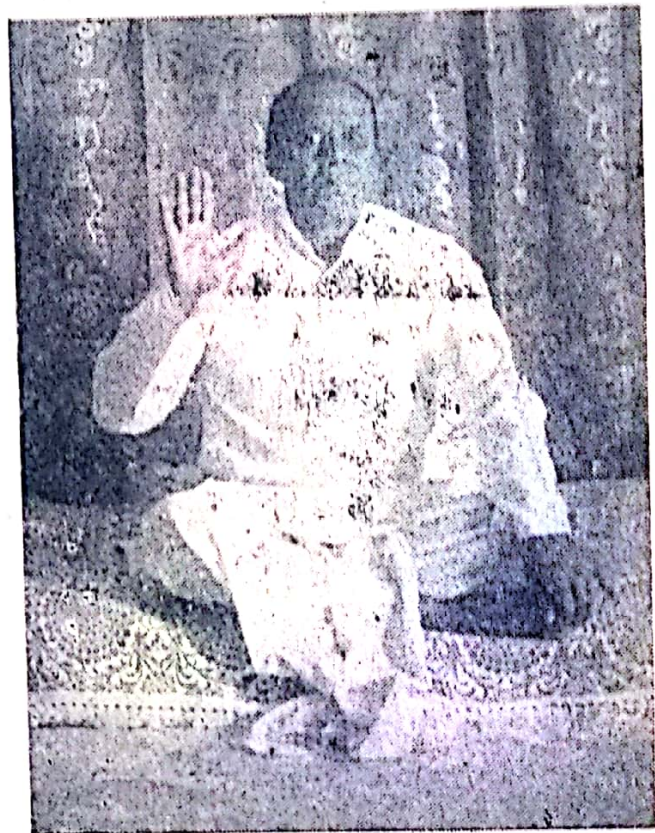
(परम पूज्य गुरुदेव)

सम्मति से चयन कर लिया जायेगा, इस हेतु कुछ विशेष नियम बनाये गये हैं जिनकी पालना अत्यन्त आवश्यक है–

१- प्रत्येक साधक पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करें। और उनसे अनुरोध कर कार्य करें।

२- अपने-अपने नगर में **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** की स्थापना करें और उसके लिए अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मन्त्री आदि का चयन करें, साथ ही इसी नाम से बैंक एकाउन्ट खोलें और उसमें प्रारम्भ में सभी सदस्य 'डोनेसन' के द्वारा कुछ द्रव्य जमा करावें जिससे कि कार्य सुचारु रूप से गतिशील हो।

३- प्रत्येक साधक पत्र लिखते समय ऊपर **'श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः'** पंक्ति को अवश्य लिखें।

४- प्रत्येक साधक केन्द्रीय समिति से **सिद्धाश्रम साधक परिवार** का बैज प्राप्त कर लें और मीटिंग के समय उसे अवश्य लगाए।

५- प्रत्येक साधक दूसरे साधक से मिलते समय या टेलीफोन पर बात करते समय प्रारम्भ और अन्त में **'जय गुरुदेव'** शब्द का उच्चारण अवश्य करें।

६- प्रत्येक नगर के **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की स्थापना होने पर लेटर पैड बना लें, उसमें ऊपर 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' छपा हो, तथा एक तरफ स्थानीय कार्यालय का पता हो तो दूसरी तरफ प्रधान कार्यालय जोधपुर का भी पूरा पता प्रकाशित होना अनिवार्य है।

७- प्रत्येक साधक सप्ताह में या महीने में जहां मीटिंग हो वहां अवश्य जावें और कीर्तन आदि में मनोयोग पूर्वक भाग लें।

८- अपने खर्च पर आप अपनी अनुभूतियों को प्रकाशित करा कर वितरित करें, साथ ही वहां के स्थानीय पत्रों में भी इस प्रकार के विज्ञापन या लेख लिख कर चेतना पैदा करें।

९- चौबीसों घण्टे गुरु मन्त्र का जप करते ही रहें, उठते-बैठते, खाते-पीते अहर्निश गुरु मन्त्र जप चलता ही रहे।

१०- हर गुरुवार को समस्त साधक किसी एक गुरु भाई के यहां उपस्थित होकर सामूहिक गुरु पूजन एवं सप्ताह भर की क्रियाओं का लेखा जोखा लें, साधनात्मक विचार विमर्श करें।

११- यह सम्भव नहीं हो तो हर माह की २१ तारीख को अवश्य ही एकत्र होकर कार्य करें प्रीतिभोज का आयोजन करें जिसमें सभी समान रूप से सहयोग दें तथा मीटिंग की सूचना केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य भेजें।

१२- प्रत्येक सदस्य हर समय यह याद रखें कि मुझे अपने परिवार में वृद्धि करनी है नये सदस्यों का आह्वान करना है और जो संकल्प लें उसका पूरा-पूरा पालन करें।

१३- जब भी संभव हो, गुरुदेव से भेंट करने जोधपुर अवश्य आएं, और यह कार्य कम से कम तीन महीने में एक बार अवश्य ही हो।

हमारा यह **सिद्धाश्रम साधक परिवार** आने वाले समय में ऐसी महान संस्था का रूप ले लेगा कि हम भावी पीढ़ियों के लिए एक विशेष द्वार और मार्ग बना कर जाएंगे। कई स्थानों पर तो **निखिल धाम-सिद्धाश्रम भवन** बना दिये गये हैं, जहां स्थायी रूप से कार्य किया जाता है और यह सब कार्य केवल सहयोग से ही सम्पन्न हुआ है।

पत्रिका के सम्बन्ध में यह शिकायत अक्सर प्राप्त होती है कि साधकों को समय पर नहीं मिलती अथवा मिलती ही नहीं, साधारण डाक से भेजे जाने के कारण रास्ते में ही खो जाती है, जबकि कार्यालय द्वारा तो नियमित रूप से पत्रिका भेज दी जाती है जहां-जहां **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की स्थापना है वहां यह उचित रहेगा कि इस इकाई के पते पर उस कस्बे की या शहर की सारी पत्रिकाएं एक साथ रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेज दी जांय और फिर सदस्यगण अपनी पत्रिका वहां से ले लें। इस हेतु आप सभी के सुझाव आमन्त्रित हैं, यह व्यवस्था आगे साधना सामग्री पर भी लागू की जा सकती हैं।

गुरु चिन्तन से बढ़ कर कोई महान चिन्तन नहीं है, बाकी सारे चिन्तन तो हमारी चिन्ताओं से जुड़े हैं जो कि चित्त को और भी अधिक अशान्त कर देते हैं जबकि गुरु चिन्तन तो चित्त को शान्ति प्रदान कर चिन्ताओं के नाश का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

चन्द्र ग्रहण तो अनुपम अवसर है सौन्दर्य-प्रेम-सम्मोहन तीव्र भाव सिद्धि की साधनाएं तो करनी ही हैं

इस वर्ष १५-६-९२ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण है, यह चन्द्र ग्रहण भारतवर्ष में दिखाई नहीं देगा, पर इससे इस महत्वपूर्ण मुहूर्त के प्रभाव में कोई अन्तर नहीं पड़ता, सूर्य तथा चन्द्र तो प्रति पल मानव जीवन को प्रभावित करते रहते हैं।

यह चन्द्र ग्रहण रात्रि को १० बज कर १७ मिनट से प्रारम्भ होगा, तथा २ बज कर ५३ मिनट पर समाप्त होगा। अतः साधना इस समय के दौरान ही सम्पन्न करनी आवश्यक है।

मनुष्य के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव दो ग्रह सूर्य और चन्द्र ही डालते है, इन दोनों ग्रहों का पृथ्वी से सीधा सम्बन्ध है, रात्रि और दिवस चन्द्र और सूर्य के कारण ही होते हैं।

चन्द्रमा को कोमलता, सौन्दर्य, भौतिक सुख, कला, गृहस्थ सुख का कारक ग्रह माना गया है, यदि चन्द्र सिद्धि हो जाय तो नीरस से नीरस व्यक्ति के जीवन में भी सांसारिक सुखों की बहार आ जाती है, वह व्यक्ति जीवन में उसी प्रकार आनन्द भोगता है जैसे मछली जल में स्वच्छन्द विचरण करती है। जो व्यक्ति ग्रहों के प्रभाव को नहीं मानता हो, उसे मेरा चैलेन्ज है कि यदि वह अपने लिए विपरीत स्थिति वाले ग्रह की साधना करे और उसे सफलता न मिले, तो मैं ज्योतिष कार्य ही छोड़

दूंगा। ग्रहों की गति का मनुष्य के जीवन से परस्पर सम्बन्ध है, और उसके शरीर की अन्तर स्थिति बाध्य स्थिति विशेष तरंगों द्वारा ग्रहों से जुड़ी रहती हैं, जिस व्यक्ति के जीवन में इन तरंगों का आपसी सामंजस्य सही होता है, वे अपने जीवन में सफल हो जाते हैं, और जिन व्यक्तियों के जीवन में ऐसे सामंजस्य का थोड़ा बहुत भी अभाव होता है तो उस क्षेत्र विशेष की बाधाएं आती ही हैं।

जिन व्यक्तियों के जीवन में चन्द्रमा की स्थिति कमजोर होती है, वे व्यक्ति संवेदन हीन, निर्बल मानसिक स्थिति वाले, पेट की बीमारियों से युक्त, कल्पना शक्ति, सौन्दर्य सुख, पूर्ण गृहस्थ सुख से वंचित रहते हैं। निर्बल चन्द्र स्थिति वाले व्यक्ति को अपने मात-पिता का पूर्ण सुख अथवा उनकी सम्पत्ति उसे पूर्ण रूप से नहीं मिल पाती। जिस व्यक्ति की कुण्डली में चन्द्रमा कमजोर है, उस व्यक्ति को राजकीय बाधाओं का सामना भी विशेष रूप से करना पड़ता है।

प्रेम के क्षेत्र में भी ऐसे व्यक्ति असफल ही रहते हैं, चन्द्रमा का प्रभाव गले से हृदय तक तथा अण्डकोष, गर्भ तथा पिंगला नाड़ी अधिकार क्षेत्र है, निर्बल चन्द्र इन सभी से संबंधित समस्याएं उत्पन्न करता है।

चन्द्र ग्रहण

जीवन में कुछ अवसर बार-बार नहीं आते हैं, योग्य व्यक्ति उन अवसरों का भलीभांति प्रयोग कर अपने जीवन में सफलता के द्वार खोल देते हैं, गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता, जब अवसर बीत जाता है तो मूर्ख व्यक्ति पश्चाताप करते रहते हैं।

चन्द्र ग्रहण का अवसर जीवन का ऐसा अवसर है, जिसे विशेष प्रकार की साधना करने वाले व्यक्ति को यह अवसर गंवा देना दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है, क्योंकि यह ऐसा स्वर्णिम अवसर है जिसमें साधक को पूर्ण रूप से साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे उसे अपने जीवन में अपनी इच्छाओं लालसाओं की पूर्ति हो सके।

जब चन्द्र ग्रहण होता है, तो समुद्र में ऐसी लहरें उठती हैं, कि मानों वे समुद्र से उठ कर चन्द्रमा को पकड़ लेंगी, सम्पूर्ण वायुमण्डल में एक ऐसा कम्पन एवं शक्ति समा जाती है, यह शक्ति ही साधना में सफलतादायक है, चन्द्र ग्रहण के समय किया जाने वाला एक माला मन्त्र जप सामान्य समय के सौ माला मन्त्र जप के बराबर होता है।

इस वर्ष चन्द्र ग्रहण १५ जून को होगा, यह चन्द्र ग्रहण यद्यपि भारत में नहीं दिखाई देगा, परन्तु सोमवार ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को पड़ने वाला यह चन्द्र ग्रहण जहां अत्यन्त क्रियाशील तथा वैज्ञानिकों के लिए विशेष अनुसन्धान काल है, वहीं साधकों के लिए यह कुछ विशेष प्रकार की साधनाओं के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध मुहूर्त है।

कौन सी साधना करें

चन्द्रमा जल तत्व प्रधान ग्रह है, अतः इस अवसर पर गृहस्थ सुख साधना, अनंग साधना, विवाह संबंधी प्रयोग, सौन्दर्य उपासना, मानसिक शान्ति, उदर रोग, गुप्तांग रोग आदि के निवारण हेतु इस रात्रि को साधना की जाती है, इसके अतिरिक्त नौकरी में प्रमोशन मानसिक शान्ति, पैत्रिक संपत्ति, यात्रा में सफलता से संबंधित साधना भी इसी समय करनी चाहिए।

आगे चार विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, और साधक इन चारों में से अपने लिए जो भी उपयुक्त हों, वह साधना अवश्य सम्पन्न करें।

चन्द्र ग्रहण समय

चन्द्र ग्रहण से सम्बन्धित साधनाएं यों तो पूरी रात्रि सम्पन्न की जा सकती हैं, परन्तु विशेष प्रयोग तो ग्रहण

काल के दौरान ही करना चाहिए। मुख्य योग रात्रि १० बजकर १७ मिनट से प्रारम्भ होगा और ग्रहण की पूर्णता २ बजकर ५३ मिनट पर होगी, अतः इन पांच घंटों के दौरान साधक एक या उससे अधिक प्रयोग संपन्न कर सकता है। साधक को चाहिए कि सायंकाल ही सारी व्यवस्था पूर्ण कर लें, जिससे कि ग्रहण समय प्रारम्भ होते ही साधना प्रारम्भ की जा सके। पहले सद्गुरुदेव का ध्यान, पूजन अवश्य ही करें।

जैसा कि मैंने ऊपर स्पष्ट किया कि चन्द्र ग्रहण के समय सम्मोहन वशीकरण साधना, राजकीय बाधा की शान्ति, सौन्दर्य उपासना अर्थात् अप्सरा सिद्धि प्रयोग गृहस्थ सुख साधना, विवाह सम्बन्धी उपासना सम्पन्न की जा सकती है, आगे कुछ विशेष प्रयोग स्पष्ट किये जा रहे हैं—

१-शत्रु बाधा शान्ति प्रयोग

ग्रहण के समय किया जाने वाला यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रयोग है इस समय साधक जो भी संकल्प लेकर इस प्रकार के उद्देश्य से कार्य करता है, तो वह कार्य निश्चित ही पूर्ण होता है।

मुकदमा, शत्रु बाधा शान्ति, भय मुक्ति, प्रमोशन इत्यादि में रुकावट के लिए भी यही प्रयोग आवश्यक है।

विधान

इस प्रयोग में **'अपराजिता यन्त्र'**, **'शंख माला'** और **'सियारसिंगी'** की आवश्यकता होती है, इन तीनों उपकरणों के माध्यम से साधना में सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, और ये तीनों ही प्रकार की वस्तुएं पूर्ण प्रामाणिक मन्त्र सिद्ध एवं चैतन्य होनी चाहिए।

साधक ग्रहण के अवसर पर पीली धोती धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने तेल का दीपक लगा लें। एक थाली में कुंकुंम से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उसके मध्य में **'अपराजिता यन्त्र'** रख दें और उसके सामने ही **'सियारसिंगी** को स्थापित कर दें।

इसके बाद इन दोनों वस्तुओं की संक्षिप्त पूजा करें अर्थात् इस पर कुंकुंम, अक्षत और पुष्प चढ़ाएं, बाद में अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक कार्य के लिए यह साधना सिद्ध कर रहा हूं और मुझे इसका लाभ कल प्रातः सूर्योदय से ही प्राप्त हो जाना चाहिए।

इसके बाद **शंख माला** से निम्न मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप करें—

अपराजित मन्त्र

ॐ ह्रीं मम शत्रून् हन हन कालि शर शर दम दम मर्दय मर्दय तापय तापय गोपय गोपय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय मम सिद्धिं देहि देहि फट्।

यह मन्त्र जप **शंख माला** से होना चाहिए और उस रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद दूसरे दिन सूर्योदय से पहले-पहले यह पूरी सामग्री समुद्र, नदी या तालाब में विसर्जित कर देनी चाहिए अथवा यह संभव न हो तो प्रयोग करने के बाद रात्रि को **अपराजिता यन्त्र, सियारसिंगी** तथा **शंख माला** को जहां तीन रास्ते मिलते हों, उस रास्ते पर रख कर आ जाना चाहिए और पीछे मुड़ कर नहीं देखना चाहिए।

ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध होता है और जीवन भर उसे अनुकूलता बनी रहती है।

२-सम्मोहन वशीकरण प्रयोग

यह सम्मोहन वशीकरण प्रयोग दूसरों के लिए नहीं अपितु स्वयं के लिए सम्पन्न किया जाता है, इस प्रयोग से साधक का शरीर विशेष प्रकार का चुम्बकीय तथा आकर्षण युक्त हो जाता है, चाहे उसका शरीर दुबला पतला हो, कमजोर हो परन्तु

चेहरे पर कुछ ऐसा आकर्षण आ जाता है कि जो भी उसे देखता हैं, स्वतः वश में हो जाता है।

इस प्रयोग को करने के बाद उसके शत्रु भी उसके वश में रहते हैं, अधिकारी अनुकूल होते हैं और सुन्दर स्त्रियां उसके चारों ओर चक्कर लगाती रहती हैं, यही नहीं अपितु यह साधना सम्पन्न करने के बाद वह जिससे भी मिलता है सामने वाला तुरन्त प्रभावित हो जाता है और उसके कहने के अनुसार कार्य करता है, घर में लड़ाई-झगड़ा समाप्त हो जाता है, पत्नी तथा पुत्र कहना मानने लग जाते हैं, और एक प्रकार से देखा जाय तो वह जहां भी जाता है लोग उसके प्रभाव से उसके व्यक्तित्व और उसके आकर्षण से खिचे हुए रहते हैं और जीवन भर उसके साथ रहने की इच्छा रखते हैं। वास्तव में ही यह प्रयोग ग्रहण के समय ही किया जाता है।

साधना सामग्री

इस साधना में **'सम्मोहन यन्त्र, वशीकरण यन्त्र,** तथा **सम्मोहन माला** का प्रयोग किया जाता है, ये तीनों ही प्रामाणिक और मन्त्र सिद्ध होनी चाहिए।

ग्रहण काल के अवसर पर साधक आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने थाली में दोनों यन्त्र स्थापित कर दें और फिर **सम्मोहन माला** से निम्न मन्त्र की ग्यारह माला मन्त्र जप करें।

सम्मोहन मन्त्र

।। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय
धीमहि तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब उपरोक्त तीनों वस्तुएं रात्रि को ही किसी रास्ते पर रख दें और घर लौट आवें, इस प्रकार करने पर यह प्रयोग सम्पन्न होता है और दूसरे दिन से ही वह अपने व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक निखार अनुभव करता है।

चन्द्र ग्रहण के समय साबर साधना में विशेष सफलता अवश्य मिलती है, रोग सम्बन्धी तथा गृहस्थ सम्बन्धी साबर प्रयोग अवश्य सम्पन्न करने चाहिए।

३-उदर रोग, सिर दर्द हरण साबर प्रयोग

चन्द्र ग्रहण के समय साधक स्नान कर सफेद वस्त्र पहिन कर अपने सिर पर लाल वस्त्र बांध कर एक ताम्र पात्र में जल रखें और सामने तीन-तीन ढेरी नमक और राई की बनाएं, पात्र के भीतर **'दिव्य शक्ति रोग हरण यन्त्र'** रखें तथा एक माला निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करें—

मन्त्र

ॐ नमो भगवते गरुडायामृतमयशरीराय सर्व-रोगविध्वंसनाय कृत्यानेकविदारणाय भूत-प्रेत-पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि गरुडादु रोगान् दूरी करो चत्कुदाडु सटी पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि ये गरुडादु रोगान् दूरी करा चेत्कुदाडु सटी पिशाच-कुमार सारी आदि रुद्र के अणु निर्मूल करो चेत्कु-दाडु आदिशक्ति के आणुमारु खिदाडी ॐ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर तेरी वाचा ।।

मन्त्र जप के पश्चात् यदि साधक रोगी हो तो यह जल ग्रहण करे अथवा जिस रोगी के रोग शान्ति हेतु प्रयोग किया हुआ है, उसे पिला दें तथा राई और नमक को तवे पर अथवा किसी अन्य पात्र में जला कर राख सूर्योदय से पहले अवश्य फेंक दें। सामान्य काल में ग्यारह दिन तक यह प्रयोग सम्पन्न करना होता है, परन्तु चन्द्र ग्रहण के समय एक बार प्रयोग करने से ही शान्ति आ जाती है।

४-अनंग सुख प्रयोग

यदि किसी के विवाह में बाधा आ रही हो या इच्छित कन्या से अथवा इच्छित वर से विवाह नहीं

(शेष भाग पृष्ठ संख्या १७ पर देखें)

तीव्र ज्वलन्त

धूम मचाते हुए धूमावती के ये प्रयोग

शक्ति साधना केवल परिकल्पना नहीं है, तांत्रिक क्रियाएं केवल पढ़ने योग्य चमत्कारिक विवरण नहीं हैं, शक्ति तो साक्षात् जीवन्त तत्व है, और इसे किसी भी चैलेन्ज के साथ सिद्ध करके बताया जा सकता है—

एक बार गुरुदेव अपने आसन पर प्रातः अपनी नित्य साधना के पश्चात् बैठे थे, और आगन्तुकों की भीड़ लगी हुई थी, प्रथम व्यक्ति व्यापारी था और बोला कि गुरुदेव दो साल हो गये पता नहीं मेरे व्यापार को क्या हो गया है, जो भी काम करता हूं, उलटा ही उलटा पड़ रहा है, कहां मैं लाखों में खेलता था और आज लाखों का कर्जा है, मैं क्या करूं? गुरुदेव ने उसे एक पुष्प दिया और कहा कि **'धूमावती साधना'** तथास्तु।

दूसरे सज्जन एक नेता जी थे, राजनीति में जबरदस्त दबदबा था, मुख्य मन्त्री तक पहुंच रखते थे, और उन्होंने कहा कि अब यह हालत हो गई है कि मेरे क्षेत्र का प्रधान तक मेरे विरुद्ध हो गया, मुझे टके भाव कोई नहीं पूछता, ऐसा अपमान बरदास्त नहीं होता। राजनीति से मैं संन्यास भी ले लूं तो करूंगा क्या? नेताओं की तो एक ही जाति होती है, वह है— **'पोलिटिक्स'**, इसके अलावा तो उन्हें कुछ आता नहीं, नेताजी ने कहा, प्रभु! कुछ करिए। गुरुदेव ने कहा **'धूमावती साधना'**।

तीसरे सज्जन की बाधा तो न्यारी थी, वे बोले कि मेरे घर में पिछले छः महीने से कमरे में कभी कोयला मिलता है, कभी मिट्टी की पोटली तो कभी तिल और सरसों, कभी रंगीन चावल, और कई बार तो ऐसा होता है कि घर में किसी कपड़े में अचानक आग लग जाती है और इन छः महीनों में कभी पत्नी बीमार रहती है तो कभी लड़की बीमार पड़ जाती है, और जहां मैं अच्छा खासा स्वस्थ था, अब मुझे इतना ब्लड प्रेसर रहने लगा कि थोड़ी देर भी निश्चिन्त हो कर काम नहीं कर सकता,

गुरुदेव ने कहा कि बहुत दुःख भोग रहे हो, करो—'धूमावती साधना'।

पूज्य गुरुदेव के एक पुराने शिष्य पीलीभीत के पास रहने वाले मिश्राजी थे, खेती भी है, थोड़ा बहुत खाद बीज इत्यादि का व्यापार भी करते हैं, और गन्ने की पिराई का काम अपने यहां लगा रखा है। गांव में किसी की हत्या हो गई, किसी ने हत्या कर लाश को उनके खेत के किनारे डाल दिया, मिश्राजी गुटबाजी में विश्वास नहीं रखते थे, गांव की राजनीति से दूर रहते थे, पूजा पाठ और अपने कार्य की ओर ही मगन रहते थे, अब पुलिस पकड़ कर ले गई और कत्ल का मुकदमा चला दिया। मजिस्ट्रेट के यहां तो क्या सेशन कोर्ट में भी जमानत नहीं हुई। जेल से ही उन्होंने गुरुदेव को पत्र लिखा कि प्रभु! आपका शिष्य महान संकट में फंस गया है, मैंने तो कोई दुष्कर्म नहीं किया और मुझे झूठा फंसा दिया गया है, थोड़ी सी अनबन तो उस व्यक्ति के साथ अवश्य थी, और जिस हिसाब से केस चल रहा है, उससे ऐसा लगता है कि फांसी नहीं तो उम्र कैद तो हो ही जायेगी। कुछ करिये वरना मेरी तो लुटिया ही डूब जायेगी।

गुरुदेव ने कहा इसके लिए यहीं आश्रम में **'धूमावती अनुष्ठान'** संपन्न करते हैं, फिर देखता हूं कि मिश्राजी का कोई बाल भी बांका कैसे कर दे।

फिजी से श्री ज्ञान प्रकाश **(नाम बदल दिया गया है)** का पत्र आया कि गुरुदेव मैं सात समुद्र पार अपनी धरती से दूर यहां इस देश में विदेश विभाग में कार्यरत हूं, सन्तानों के उचित विवाह में बहुत परेशानियां आ रही हैं, बात चलती है और टूट जाती है, गुरुदेव ने कहा तुम वहां **'धूमावती अनुष्ठान'** करो, और पुनः पत्र आया कि मुझे पूर्ण विधि का ज्ञान नहीं है, यहां फिजी में योग्य पंडित नहीं हैं, क्या केन्द्र में सम्भव है? उनके विशेष अनुरोध पर यहां अनुष्ठान सम्पन्न कर उन्हें विशेष विधि और यन्त्र भेज दिया गया, सब कुछ ठीक हो गया।

ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं, जो सौ टंच खरे उतरे अलग-अलग क्षेत्रों के लोग, अलग-अलग उनका व्यक्तित्व, अलग-अलग उनका लक्ष्य और विशेष बात यह है कि लक्ष्य पूर्ति केवल एक ही साधन द्वारा और वह साधन है-**धूमावती साधना** का पूर्ण कल्प, जिसे एक बार शुरू करें तो पूरा अवश्य किया जाय और यदि सब कुछ सही रूप से पूर्ण हो जाय तो फिर कमी किसी बात की नहीं।

आखिर ऐसा क्या है?

यदि आप साधक हैं, भक्ति में आपकी रुचि है, साधना आपका जीवन दर्शन है तो निश्चय ही आपका दृष्टिकोण दूसरों से अलग होगा, आपके चित्त में एक निर्मलता होगी, सात्विक भाव होगा, दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में अथवा किसी की हानि में आपको प्रसन्नता नहीं होगी।

इसका तात्पर्य यह तो नहीं कि आप निर्बल बन जांय, किसी भी शास्त्र में ऐसा नहीं लिखा है कि व्यक्ति को साधक को दूसरों का आघात सहन करना चाहिए, दुष्टों से डरते रहना चाहिए, अपने जीवन में व्यर्थ की पीड़ा झेलते हुए भी प्रसन्नता का नाटक करते रहना चाहिए, ऐसा करना तो उस महान शक्ति का अपमान होगा, उस गुरु का अपमान होगा, जिसके आप शिष्य हैं। जब तक जीवन की पीड़ाओं को हटा कर जीवन में निर्मलता नहीं ला सकते, तब तक शुद्ध भाव जागृत कर अपना अंतिम लक्ष्य निराकार परब्रह्म में विलीन हो कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का लक्ष्य अधूरा ही रहेगा।

किसी हिंसक जानवर से सामना होने पर उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार नहीं करेंगे उसे निवेदन भी नहीं करेंगे कि आप मुझे छोड़ दीजिये, उसका तो अपने सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र सहित मुकाबला कर उसे परास्त करना ही पड़ेगा।

और जीवन क्या है? इसमें भी तो हिंस्र पशु आपकी बीमारियों के रूप मे, शत्रुओं के रूप में, दुर्घटना के रूप में, तांत्रिक प्रयोगों के रूप में, धोखा देने वालों के रूप में,

गरीबी, मुकदमे के रूप में पग-पग पर भरे पड़े हैं, और इनका मुकाबला कर इन पर विजय प्राप्त कर ही इन्हें वश में किया जा सकता है।

धूमावती स्वरूप आख्यान

धूमवती की कथा में तो दो बातें विशेष रूप से हैं, प्रथम तो यह दुर्गा की विशेष कलह निवारिणी शक्ति है, दूसरी कथा के अनुसार यह पार्वती का यह विशाल एवं रुक्ष स्वरूप है, जो क्षुधा से विकलित कृष्ण वर्णीय कलहकारी, कुटिल रूप है, जो भक्तों को अभय देने वाली तथा उनके शत्रुओं के लिए साक्षात काल स्वरूप है, जहां धूमावती साधना संपन्न होती है वहां इसके प्रभाव से शत्रुनाश का विग्रह, बाधा नाश का कार्य अवश्य ही प्रारम्भ हो जाता है। धूमावती साधना मूल रूप से तांत्रिक साधना है, भूत-प्रेत पिशाच तो धूमावती साधना से इस प्रकार गायब होते हैं, जैसे जल को अग्नि देने पर वाष्प रूप में विलीन हो जाता है। धूमावती का स्वरूप क्षुधा अर्थात् भूख से पीड़ित स्वरूप है और इसे अपने भक्षण के लिए कुछ न कुछ अवश्य चाहिए। अतः जब साधक इसकी साधना करता है तो वह प्रसन्न होकर साधक के शत्रुओं का भक्षण ही कर लेती है।

ध्यान मन्त्र

विवर्णा चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा।
सूर्पहस्तातिरक्ताक्षीवृत्तहस्ता परान्धिता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृश कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयहा कलहास्पदा॥

धूमावती जयन्ती

धूमावती साधना केवल कुछ विशेष दिनों में ही प्रारम्भ की जा सकती है, तन्त्र विद्या के जानकार और नित्य प्रति तन्त्र साधना करने वाले तांत्रिक और कोई साधना करें अथवा न करें, अष्टमी और अमावस्या के दिन धूमामती अनुष्ठान अवश्य ही संपन्न करते हैं।

इस वर्ष ८ जून १९९२ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को धूमावती जयन्ती है, इस दिन दुर्गाष्टमी का एक विशेष योग भी बना है, अतः साधक को इस दिन धूमावती अनुष्ठान अवश्य ही संपन्न करना चाहिए।

काश्मीर क्षेत्र में तो हरसाल इस धूमावती जयन्ती पर एक विशेष मेला लगता है, जिसे क्षीर भवानी का मेला कहते हैं और यह मान्यता है, कि इस दिन का व्रत इत्यादि सम्पन्न करने से तथा क्षीर भवानी जो कि धूमावती का ही एक दूसरा नाम है समस्त पाप दोष से मुक्ति मिलती है, इच्छाओं कामनाओं की पूर्ति होती है।

अनुष्ठान

साधक स्नान कर काली धोती धारण कर, व्याघ्र चर्म अथवा मृग चर्म पर बैठ जांय, यदि संभव न हो तो, ऊनी आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय। सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर काला कपड़ा बिछा कर उसके ऊपर स्टील या लोहे की थाली रख दें, इस थाली के अन्दर पूरी तरह से काजल लगा दें।

इसके बाद साधक चांदी की शलाका से या किसी तिनके की सहायता से एक बूढ़ी स्त्री का चित्र अंकित करें जिसके बाल बिखरे हुए हों और जिसके गले में नरमुण्ड माला धारण की हुई हो, यह धूमावती का प्रतीक चिन्ह है। इसके मस्तक पर धूमावती यन्त्र स्थापित करें।

इसके बाद साधक एक दूसरी स्टील की थाली में ग्यारह तेल के दीपक लगावें, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, इस साधना में अगरबत्ती आदि को आवश्यकता नहीं होती।

इसके बाद साधक थाली में जो धूमावती का चित्र बनाना है, उसके सिर के चारों ओर 'ग्यारह हकीक नग' रखें, धूमावती के बांएं पैर के पास 'लघुनारियल' स्थापित करें और दाहिने पैर के पास 'सियारसिंगी' स्थापित करें। धूमावती के वक्षस्थल पर या हृदय पर 'गोतीशंख' रखें और उसके चारों ओर पांच रुद्राक्ष के दाने रखें।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प लें, कि मैं अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक पूर्ण क्षमता के साथ जालधन्र पीठ सिद्ध धूमावती को सिद्ध कर रहा हूं, ऐसा कह कर जल को जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें, इसे विनियोग कहते हैं।

विनियोग

अस्य धूमावतीमन्त्रस्य पिप्पलादऋषिः निवृच्छन्दः ज्येष्ठा देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं ममाभीष्टसिद्धयर्थे (शत्रुहनने) जपे विनियोगः।

विनियोग के बाद निम्न अंगों को स्पर्श करते हुए हृदयन्यास सम्पन्न करें—

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः
ॐ धूं शिरसे स्वाहा
मां शिखायै वषट्
ॐ वं कवचाय हुं
ॐ तिं नेत्र त्रयाय वौषट्
ॐ स्वहा अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक करन्यास सम्पन्न करें इसमें अंगूठे तथा जिन उंगलिओं का वर्णन है उनको देखते हुए मन्त्र उच्चारण करें—

करन्यास

ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः
ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इसके बाद बांएं हाथ में थोड़ा चावल लेकर इन चावलों को कुंकुम से रंग कर यन्त्र पर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए थोड़ा-थोड़ा डालें, जिससे कि प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न किया जा सके।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्या प्राणा इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं क्षं स ह ॐ क्षं स हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री धूमावत्या जीवन इह स्थितः ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं श क्षं स हं ॐ क्षं सं हं हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्यास्सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं क्षं सं हं ॐ क्षं सं हंसः श्री मद्धमावत्या वाङ्मनश्चक्षूश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखञ्चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

इसके बाद साधक दोनों हाथों में पुष्प लेकर **धूमावती यन्त्र** पर चढ़ाते हुए ध्यान करें।

इसके बाद साधक **'सफेद हकीक माला'** से निम्न धूमावती मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप करें, इस अवधि में साधक उठे नहीं और पूरी ११ माला मन्त्र जप होने के बाद ही उठें, साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखें कि जो ग्यारह तेल के दीपक लगाएं वे बराबर जलते रहें।

धूमावती मन्त्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक थाली में जो कुछ तांत्रोक्त सामग्री है, उसमें से **धूमावती यन्त्र** तथा **हकीक माला** को छोड़कर सारी सामग्री घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर जमीन में गाड़ दें अथवा नदी या तालाब में विसर्जित कर दें, यदि साधक दिन में साधना कर रहा है तो रात्रि को यह सामग्री विसर्जित कर सकता है अथवा दिन में पूरी सामग्री की जो थाली में है, जमीन में गाड़ सकता है अथवा नदी, तालाव या समुद्र में विसर्जित कर सकता है।

धूमावती साधना का यह विधान अत्यन्त विलक्षण एवं विशिष्ट फलप्रदायक विधान है, बाधाएं चाहे कितनी ही विकराल अथवा विशाल हों, धूमावती साधना से बाधाओं पर विजय प्राप्त होती ही है। इस साधना के संबंध में ज्यादा लिखने के बजाय यह कहना उपयुक्त होगा कि इसे सम्पन्न कर इसका प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर साधक स्वयं ही निर्णय करें।

निवेदन है कि इस साधना का प्रयोग किसी गलत कार्य हेतु नहीं करें। गलत कार्यों हेतु किये गये तांत्रिक प्रयोगों से प्रारम्भ में तो लाभ मिलता है लेकिन अन्ततः ऐसे तन्त्र प्रयोग करने वाले व्यक्ति को ही हानि उठानी पड़ती है। ●

(पृष्ठ संख्या १२ का शेष भाग)

हो रहा हो, प्रेम में असफलता प्राप्त हो रही हो, पत्नी को पति का प्रेम प्राप्त नहीं हो रहा हो या गृहस्थ सुख सम्बन्धी किसी प्रकार की बाधा हो तो चन्द्र ग्रहण के समय साधक को यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

विधान

चन्द्र ग्रहण की रात्रि को हल्दी को दूध में पीस कर उसके रस से पूजा स्थान में अपने सामने एक वृत्त बनावें और वृत्त के चारों ओर १६ बिन्दु बनाएं, तथा मध्य में एक त्रिकोण बनाएं १६ बिन्दुओं पर एक-एक **कामबीज** स्थापित कर मध्य में **चन्द्राक्षी अनंग क्लीं यन्त्र** स्थापित करें, इस यन्त्र पर केवल यही हल्दी युक्त दूध अर्पित करना है तथा इत्र का अर्पण करते हुए साधक अपनी कामना को बोल कर श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुए कामना सिद्धि की प्रार्थना कर **रति माला** से निम्न बीज मन्त्र कीविषम संख्या में जैसे पांच या ग्यारह या इक्कीस या इक्यावन माला मन्त्र जप करें, मन्त्र जप से पहले हल्दी से अपने मस्तक पर तिलक करें तथा दोनों बांहों पर गले तथा हृदय पर भी बिन्दी लगाएं —

मन्त्र

॥ ॐ क्लीं कामना क्लीं कामिन्यै क्लीं ॥

मन्त्र अनुष्ठान पूर्ण हो जाने पर साधक उसी मुद्रा में बैठ कर अपनी इच्छा को प्रकट करते हुए यन्त्र पर पुष्पांजलि अर्पित करें तथा रात्रि शयन उसी स्थान पर करें रात्रि कुछ विशेष स्वप्न तथा आभास उसे अवश्य प्राप्त होता है उन्हीं निर्देशों के अनुसार वह कार्य करें।

वास्तव में चन्द्र ग्रहण की सभी साधनाएं जीवन सुखों की पूर्ति की साधनाएं हैं और पुरुष हो या स्त्री सभी को इस अवसर पर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु इच्छानुसार साधना अवश्य करनी चाहिए। ●

सूर्य ग्रहण की तांत्रोक्त तारा साधना

धन प्राप्ति की इच्छा रखना और धन प्राप्ति के लिए कार्य करने में न तो कोई दोष है और न अपराध, गृहस्थ जीवन के लिए धन ही मूल है, जिसके ऊपर उसका गृहस्थ रूपी वृक्ष फलता फूलता और वृद्धि करता है।

धन की साधना हेतु दस महाविद्याओं में तारा साधना सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है, और ऐसा भी कहा जाता है कि तारा महाविद्या सिद्ध होने पर साधक को प्रतिदिन स्वर्ण प्रदान करती है, अर्थात् यह निश्चित है कि तारा सिद्धि प्राप्त साधक की आय में वृद्धि हो जाती है, और उसे आय के नये-नये स्रोत प्राप्त होते हैं, आकस्मिक धन प्राप्ति भी सम्भव होती है।

सूर्य ग्रहण तारा साधना के लिए श्रेष्ठ सिद्ध मुहूर्त दिवस है, और इस दिन ग्रहण कालिक तांत्रोक्त तारा साधना अवश्य करनी चाहिए।

इस प्रयोग हेतु पांच सामग्रियों की आवश्यकता रहती है, जिनमें **ग्रहण कालोक्त तारा यन्त्र, तारा चित्र,** ग्रहण अभिषेक युक्त **तारा माला,** सिद्धिदायक **सूर्य यन्त्र** तथा **सिद्धोय यन्त्र** आवश्यक है, इसे **सूर्य ग्रहण तारा पैकेट** कहा गया है।

सूर्य ग्रहण मंगलवार ३० जून को है, और साधक को यह साधना २९ जून सोमवार की रात्रि को सम्पन्न करनी चाहिए।

विधान

सूर्योदय से तीन घण्टे पहले उठ कर स्नान कर शुद्ध पीली धोती धारण कर उत्तराभिमुख बैठ कर उपकरणों में प्राप्त यन्त्र को धागे में पिरो कर गले में पहिन लें और **सूर्य यन्त्र, तारा यन्त्र** की पूजा करें और तारा चित्र के सामने पुष्प आदि रखें फिर **तारा माला** से निम्न मन्त्र की मात्र ग्यारह माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रं तारायै श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः ॥

जब ग्यारह माला मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तब यन्त्र और चित्र को अपने पूजा स्थान में रख दें और गले में पहिने हुए यन्त्र को उस स्थान पर रख दें जो आपके लिए विशेष महत्वपूर्ण हो, जैसे कि आपका कार्यालय, आपका सोने का कमरा या अन्य कोई महत्वपूर्ण स्थान हो, ऐसा करने पर तारा साधना सिद्ध होती है और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त कर सकता है। ●

शक्तिपात

साधना सिद्धि का प्रमुख रूप, जो केवल गुरु कृपा से ही संभव है

साधना सिद्धि में शक्तिपात सबसे महत्वपूर्ण क्रिया है और यह क्रिया केवल गुरु ही शिष्य के प्रति सम्पन्न कर उसमें एक शिष्यत्व प्रक्रिया प्रारम्भ करते हैं, और जब यह स्थिति प्रारम्भ होती है तो शिष्य को सभी सुप्त शक्तियां जागृत होती हैं। शिष्य जब गुरुदेव के पास आता है तो वह दिशाहीन तथा अपने कर्मों के कारण मुक्ति, ज्ञान और सिद्धि के मार्ग से भटका हुआ होता है, इस अवरुद्ध मार्ग से उसे सही मार्ग पर लाने के लिए जो क्रिया सम्पन्न की जाती है वही शक्तिपात है। शक्तिपात द्वारा गुरु अपनी शक्ति को शिष्य में संचारित करते हैं और यह क्रिया केवल गुरु कृपा पर निर्भर करती है। **मालिनी विजय** ग्रन्थ में लिखा है कि—

शक्तिपातानुसारेणशिष्योऽनुग्रहमर्हति । यत्र शक्तिर्न पतति तत्र सिद्धिर्न जायते ।।

अर्थात् शक्तिपात के अनुसार ही शिष्य अनुग्रहीत होता है, शक्तिपात न होने से सिद्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती।

गुरु कृपा से ही यह गुरु प्रसाद प्राप्त होता है, साधना के मूल रहस्य एवं कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया केवल शक्तिपात से ही प्राप्त होती है, इसके कारण उसकी शक्ति का जो जागरण होता है, उससे वह मन्त्र सिद्धि तन्त्र सिद्धि प्राप्त करता हैं, शक्तिपात शिवत्व भाव है, इस स्थिति तक पहुंचने के लिए शिष्य को अपनी भक्ति का, अपने भाव का, अपने विश्वास का, अपनी श्रद्धा का स्वरूप गुरुदेव के सामने स्पष्ट करना आवश्यक है। क्योंकि साधना में सिद्धि के लिए आवश्यक है कि —

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।

अर्थात् साधक की जैसी भक्ति देवता में हो, वैसी ही गुरु में भी होनी चाहिए ।

गीता में कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन, जिस प्रकार अग्नि काष्ठ अर्थात् ईंधन को जला कर भस्म कर देती है, उसी प्रकार शक्तिपात की ज्ञान रूपी अग्नि शिष्य के समस्त दोषों को भस्म कर देती है, गुरु अपने शिष्य को तीन प्रकार के शक्तिपात प्रक्रियाओं से गुजारते हैं— १-तीव्र, २-मध्यम, और ३-मन्द । इनमें भी प्रत्येक के तीन-तीन भेद हैं, जैसे-जैसे शिष्य अपनी भक्ति में आगे बढ़ता है, उसी अनुसार गुरु उसे क्रमबद्ध रूप में मन्द से तीव्र की ओर शक्तिपात प्रदान करते हैं ।

गुरु के सामर्थ्य का कोई अन्त नहीं होता पर जब गुरु शक्तिपात करते हैं, तो वे शिष्यों के दोषों का जो प्रहार सहन करते हैं, उसकी पीड़ा होने पर भी वे अपने श्रीमुख पर प्रकट नहीं करते, उसी मधुर मुस्कान के साथ शिष्य की पीड़ा को झेलते हुए उसे श्रेष्ठ मार्ग पर आगे बढ़ाते रहते हैं ।

शक्तिपात प्राप्त करने हेतु शिष्य में भी कुछ गुण होने चाहिए, जिस प्रकार बंजर भूमि में बोया गया बीज वृक्ष नहीं बन सकता, उसी प्रकार यदि शिष्य अविवेकी, पुरुषार्थहीन है, तो उसका उद्धार नहीं हो सकता, अतः शिष्य को सत्पात्र, श्रद्धालु, विश्वासी, विचारशील होना आवश्यक है ।

योग वशिष्ठ में लिखा है, कि जो व्यक्ति समाधि के साधनों गुण और शील से युक्त हो, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाला, सदाचार का पालन करने वाला, श्रद्धा भक्ति से युक्त, विचारवान, गुरु के प्रति श्रद्धा एवं निष्काम भाव युक्त भक्ति रखता हो, वही दीक्षा और शक्तिपात का अधिकारी है । जिसके मन में श्रद्धा नहीं है, वह गुरु कृपा का प्रसाद प्राप्त नहीं कर सकता ।

शक्तिपात की वैज्ञानिक क्रिया

जिसने शक्ति का संचय किया हो, वही अपनी शक्ति दूसरों को वितरित कर सकता है, गुरु जो भण्डार अपने भीतर एकत्रित करते हैं उसे सीमित न रख कर अपने शिष्यों में बांट देते हैं, अपने तप एवं ज्ञान की पूंजी को श्रेष्ठ उद्देश्यों से शिष्यों में बांटना ही शक्तिपात है ।

शक्तिपात की क्रिया स्पर्श द्वारा अथवा नेत्रों द्वारा शिष्य को देख कर जाग्रत की जा सकती है, जब शिष्य गुरु चरणों का स्पर्श करता है, तो उसे असाधारण प्रसन्नता का अनुभव होता है क्योंकि गुरु के चरणों से शिष्य को गुरु की शक्ति प्राप्त होती है और इस संचारण क्रिया से शिष्य के भीतर शुद्ध भाव जागृत होते हैं, उसकी सामर्थ्य बढ़ती है । **सुबाल उपनिषद** में लिखा है कि जो शिष्य अन्तःकरण से जिसमें एक महीना, छः महीने अथवा एक वर्ष गुरु सेवा की हो, तथा गुरुदेव द्वारा ली गई परीक्षा में सफल रहा हो, वही शक्तिपात प्राप्त कर उसका उपयोग कर सकता है ।

निष्काम भाव से जो शक्ति संचारण होता है, वह शिष्य के लिए वरदान है और यदि शिष्य इसे ग्रहण करने में असमर्थ रहता है, तो यह उसका दुर्भाग्य है, अपने जीवन में गुरु तत्व को पहिचान कर उनकी भक्ति द्वारा अपने भीतर शिवत्व भाव और शिवत्व भाव से पूर्ण ब्रह्मत्व भाव की प्राप्ति ही परम लक्ष्य होना चाहिए, और यही शिष्य का मार्ग है । ●

लक्ष्मी का एक अद्भुत तन्त्र

लक्ष्मी किस स्वरूप में और कब अपने साधक का उद्धार कर देती है, यह कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता परन्तु इतना निश्चित है कि जो साधक निश्चित रूप से लक्ष्मी साधना करते रहते हैं, उन पर लक्ष्मी कृपा अवश्य होती है। एक विशेष प्रयोग पाठकों हेतु स्पष्ट किया जा रहा है, इस प्रयोग के सम्बन्ध में इतना निश्चित है कि साधक को फल किसी न किसी रूप में अवश्य ही मिलता है।

लक्ष्मी साधना के सम्बन्ध में जो विधियां तन्त्र साहित्य में तथा अन्य शास्त्रों में दी गयी हैं, साधक उनका पालन पूर्णतया नहीं करते, कुछ दिन मन्त्र अनुष्ठान करने के पश्चात् उसे छोड़ देते हैं, कई बार ती साधना में उचित सामग्री अथवा उचित विधि का अभाव होने से ही इस साधना में सफलता नहीं मिलती। लक्ष्मी साधना में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

- वास्तविक रूप से तो लक्ष्मी की साधना अर्द्ध-रात्रि को ही सम्पन्न करनी चाहिए और यदि नक्षत्र ग्रह योग श्रेष्ठ हों तो उस दिन ही ऐसा प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए।

- **सर्वार्थ सिद्धि योग रवि पुष्य** उत्तम कहे गये हैं, विशेष बात यह है कि लक्ष्मी साधना में **हस्त-नक्षत्र** का विशेष योग माना गया है।

- आने वाले समय में १३ मई १६६२, १० जून ६२, ७ जुलाई ६२, ३ अगस्त ६२ **हस्त नक्षत्र** से युक्त हैं। इनका विशेष ध्यान रखते हुए इस दिन लक्ष्मी प्रयोग अवश्य करें।

- लक्ष्मी साधना में साधक को अपना मुंह पश्चिम दिशा की ओर कर बैठना चाहिए।

- लक्ष्मी साधना में आसन ऊनी हो और उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर लक्ष्मी पूजा सम्पन्न करनी चाहिए।

- लक्ष्मी साधना में मन्त्र जप केवल कमलगट्टा माला से ही सम्पन्न किया जाता है, तथा कमलगट्टा का

ही अर्पण किया जाना उचित रहता है।

- यदि कमल के पुष्प की व्यवस्था हो सके तो यह पुष्प अर्पित करना चाहिए।
- साधक की मुद्रा पद्म मुद्रा होनी चाहिए, अर्थात् दोनों हाथों की उंगलियों तथा अंगूठों को मिला कर खुले हुए कमल के आकार की मुद्रा को पद्म मुद्रा कहा जाता है, उसी मुद्रा में लक्ष्मी आह्वान तथा प्रार्थना करनी चाहिए।
- लक्ष्मी साधना में दूब (दुर्वा) का विशेष महत्व है और इस दुर्वा को दूध में डुबो कर देवी को अवश्य अर्पित करें।

ऊपर लिखे गये नियम सभी प्रकार के लक्ष्मी साधनाओं के लिए आवश्यक भी हैं, इसके अतिरिक्त निश्चित संख्या में मन्त्र जप इत्यादि करना चाहिए, नित्य ताजा शक्कर का प्रसाद खीर, बताशे आदि देवी महा लक्ष्मी को अर्पित किया जाता है।

सामग्री

इस विशिष्ट प्रयोग हेतु केवल **श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यन्त्र** तथा **कमलगट्टा माला** आवश्यक है।

विधान

अर्द्ध रात्रि को स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन कर ऊनी आसन पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने पूजा स्थान में बैठें, अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर ताम्र कलश स्थापित करें, कलश में जल डालें तथा इसके साथ ही **ग्यारह कमल गट्टा** तथा दूब डालें, तत्पश्चात् अपने सामने एक तांबे का दीपक जलाएं, इस दीपक में जो बत्तियां हों वे कम से कम पांच अवश्य हों, तथा इससे अधिक बत्तियों का प्रयोग करें तो वे विषम संख्या में ही होनी चाहिए। दीपक में शुद्ध घी का ही प्रयोग करें।

अब साधक चन्दन तथा अबीर गुलाल से कलश का पूजन कर दूसरे ताम्र पात्र में **श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यन्त्र** स्थापित करें, चन्दन, गुलाल तथा सिन्दूर से यन्त्र का पूजन करें तथा यन्त्र के आगे पुष्प स्थापित करें।

अब साधक पद्म मुद्रा में बैठ कर प्रसाद अर्पित करते हुए प्रार्थना मन्त्र का इक्यावन बार उच्चारण करें।

प्रार्थना मन्त्र

॥ ॐ महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं,
गृह-वासो करोसि त्वम् ॥

अब साधक जल को अपने नेत्रों से लगावें तथा सामान्य मुद्रा में बैठ कर **कमलगट्टा माला** से इस विशिष्ट कामेश्वरी बीज मन्त्र का जप करें। विशेष अनुष्ठान हेतु ४१ हजार मन्त्र जप का विधान है, इसी के अनुसार नित्य प्रति की जप संख्या निश्चित कर लें।

मन्त्र

॥ ॐ महालक्ष्मी श्रीं श्रीं श्रीं कामबीजाय फट् ॥

इस प्रकार मन्त्र जप पूर्ण कर प्रसाद ग्रहण करें और जितने दिन भी यह अनुष्ठान चल रहा हो उतने दिन तक एक समय भोजन करें।

इस अनुष्ठान की पूर्णता होने पर महालक्ष्मी की पूजा से साधक को निश्चित फल प्राप्ति अवश्य होती ही है, इसमें संदेह रखने वाला जीवन भर दरिद्री ही रहता है। *

भगवती दिगम्बरी

दक्षिण काली साधना

जो केवल सूर्य ग्रहण के अवसर पर ही सम्पन्न की जाती है

यों तो काली, महाकाली और दक्षिण काली से सम्बन्धित कई साधनएं साधना ग्रन्थों में प्रकाशित हैं. परन्तु दिगम्बरी दक्षिण काली साधना, साधना क्षेत्र में अत्यन्त उच्चस्तरीय साधना मानी गयी है, वामा खेपा जैसे तांत्रिक ने भी स्वीकार किया है कि दिगम्बरी दक्षिण काली साधना सर्वाधिक गुह्य, गुप्त, अलौकिक, अद्वितीय और अनुपम है, पूरे जीवन काल में विरले लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है. कि वे ऐसी उच्च स्तरीय साधना को प्राप्त करें. इसके अलावा रहस्य को समझें, जब जीवन में पुण्योदय होते हैं तभी ऐसी साधना साधक सम्पन्न करता है।

त्रिजटा अघोरी तो विश्व का अद्वितीय आचार्य है और उसने साधनाओं के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं, उसने भी अपने **'तन्त्र समुच्चय सपर्या'** ग्रन्थ में स्वीकार किया है कि कई वर्ष भटकने के बाद और हजारों तांत्रिकों से मिलने के उपरान्त ही स्वामी निखिलेश्वरान्द जी से मुझे दिगम्बरी दक्षिण काली साधना प्राप्त हुई और मेरे पास तन्त्र के हजारों रत्नों में से यह अपने आपमें अलौकिक अनुपम रत्न है।

दिगम्बरी दक्षिण काली साधना जन साधारण में कम प्रचलित है, इसका कारण इस साधना का महत्वपूर्ण होना है, यह साधना एक प्रकार से पूरे जीवन का वरदान है और उच्च स्तरीय योगी उसी शिष्य को यह साधना प्रदान करते थे जो जीवन भर उनकी सेवा करता था, और जो मन-वचन-कर्म से उनके प्रति अनुरक्त रहता हुआ साधना मार्ग पर अग्रसर होता था, जीवन के अंतिम समय में उसी को यह दिव्य साधना प्रदान की जाती थी।

काली का तात्पर्य

भारतीय आचार्यों ने भगवती काली को दस महाविद्याओं में सर्व प्रमुख स्थान दिया है, आचार्य भट्ट ने काली के तेरह अर्थ बताये हैं—

१-जिसकी साधना करने से काल का क्षय होता है, और व्यक्ति दीर्घायु एवं इच्छा मृत्यु प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

२-काली का तात्पर्य है काल को पहिचानने की क्षमता प्राप्त करने वाला, ऐसा साधक भूत भविष्य और वर्तमान को एक पल में पहिचान लेता है।

३-काली का तात्पर्य जीवन में शत्रुओं पर प्रबल रूप से प्रहार करने वाली और शत्रुओं को समाप्त करने वाली महादेवी।

४-काली जीवन के समस्त विकारों, दोषों, अपराधों को समाप्त करने वाली है, शराब का व्यसन और अन्य बुरी आदतों को एक ही क्षण में समाप्त कर काम, क्रोध, लोभ मोह तथा अहंकार से परे हटा कर साधक को मोक्ष के मार्ग की ओर प्रवृत्त करने वाली है।

५-काली को राज राजेश्वरी भी कहा गया है, इसका तात्पर्य यह उच्च स्तरीय लक्ष्मी प्रदाता है, काली की साधना करने से साधक जीवन में स्वतः व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति होती ही रहती है।

६-काली विन्ध्यवासिनी है, इसका तात्पर्य जीवन में यह साधना पूर्ण भोग और मोक्ष को प्रदान करने वाली है।

७-इसे 'शरण्य' कहा गया है, यह जीवन के समस्त दु:खों को समाप्त कर पूर्ण ध्यान लगाने में समर्थ और सहायक है।

८-यह विज्ञान रूपा है और इसकी साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और साधक सभी क्षेत्रों में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

९ यह दुर्गा स्वरूप है, अतः जीवन में आने वाली बाधाओं को तुरन्त समाप्त करने में सहायक है।

१०-यह आपत्ति उद्धारक महादेवी है, इसकी साधना करने से पूरे जीवन काल में किसी प्रकार की कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।

११-यह सर्व सिद्धि प्रदायक है, छोटी-मोटी साधनाओं या विविध साधनाओं में समय बरबाद करने की अपेक्षा एक ही साधना में पूर्णता प्राप्त करने से समस्त रूपों में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

१२-काली को प्रबल रोग मुक्ता कहा गया है यह समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने वाली और वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदलने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिसके द्वारा व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।

१३-यह महाविद्याओं में प्रमुख है, इसकी साधना करने से अन्य सभी महाविद्याएं स्वतः सिद्ध हो जाती है।

सूर्य ग्रहण

यह सौभाग्य है कि इस वर्ष सूर्य ग्रहण का योग बन रहा है और सूर्य ग्रहण के संबंध में शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधना सौ बार करने पर भी सिद्ध नहीं होती वह सूर्य ग्रहण के अवसर पर विधि-विधान सहित सम्पन्न कर दिया जाय तो निश्चित रूप से फल प्राप्त होता है। इसीलिए तीव्र साधनाओं के लिए सूर्य ग्रहण का तथा प्रेम, सौन्दर्य की साधनाओं के लिए चन्द्र ग्रहण का प्रत्येक साधक को प्रतीक्षा रहती है, जब ये दोनों अवसर आते हैं तो साधना के लिए किसी अन्य मुहूर्त को देखना व्यर्थ है।

सूर्य अग्नि युक्त तेजस्वी ग्रह है, और इस सृष्टि का संचालन कर्ता है, जिसके चारों ओर पृथ्वी चक्कर लगाती है, सूर्य की शक्ति से ही सभी प्राणियों को शक्ति प्राप्त होती है, यह वैज्ञानिक मत है और आज से हजारों वर्ष पहिले हमारे ऋषि मुनियों ने इस मत को जानते हुए सूर्य की उपासना पर विशेष जोर दिया तथा पंचदेव उपासना में शिव गणेश, विष्णु, शक्ति के साथ सूर्य उपासना को प्रधानता दी गयी है।

इस वर्ष सूर्य ग्रहण ३० जून ९२ मंगलवार **आर्द्रा नक्षत्र** से युक्त **वृद्धि योग** संयुक्त ग्रहण योग है, इस विशेष दिवस को मिथुन का चन्द्रमा और मिथुन का सूर्य है, इन दोनों का संयोग एक तीव्र शक्ति संयोग बना है, भारत में यह सूर्य ग्रहण नहीं दिखाई देगा, लेकिन इसका प्रभाव उतना ही रहेगा जैसा कि साक्षात् ग्रहण दिखाई देने पर रहता है।

यह सूर्य ग्रहण प्रातः १० बज कर ४९ मिनट से प्रारम्भ होगा तथा १ बज कर ३ मिनट पर समाप्त होगा, परन्तु सूर्यकालिक ग्रहण साधना नियमों के अनुसार सूर्य ग्रहण उदय होने से १२ घण्टे पूर्व तथा ग्रहण समाप्ति तक साधना योग माना गया है, अतः साधक २९ जुन की रात्रि के १० बजकर ४९ मिनट से ३० जून के १ बजकर ३ मिनट तक साधना सम्पन्न कर सकता है।

सूर्य ग्रहण के समय सबसे प्रधान साधना तो दिगम्बरी दक्षिण काली की ही साधना है, और आगे पूरे वर्ष में इतना महत्वपूर्ण योग नहीं बन रहा है, अतः साधक को ऐसा महत्वपूर्ण अवसर गंवाना नहीं चाहिए।

दिगम्बरी दक्षिण काली

वशिष्ठ, विश्वामित्र, ब्रह्मा सहित शंकराचार्य तथा अन्य महत्वपूर्ण योगियों ने, तांत्रिकों ने दक्षिण काली साधना के सम्बन्ध में जो वर्णन किया है, उस वर्णन से यह स्पष्ट है कि यह साधना कल्याणकारी और मनोवांछित पूर्णता सिद्धि साधना है, शक्ति तथा लक्ष्मी के साथ-साथ तेजस की साधना मूल रूप से दिगम्बरी दक्षिण काली साधना है।

इस साधना को संपन्न करने में न तो आयु का बन्धन है, और न ही गृहस्थ अर्थात् विवाहित, अविवाहित, स्त्री अथवा पुरुष का बन्धन है।

साधना विधान

शास्त्रोक्त नियमों के अनुसार साधक को २६ जून की रात्रि को ही ११ बजे के पश्चात् यह साधना प्रारम्भ कर देनी चाहिए, जिससे सभी अनुष्ठान पूरा हो सके।

साधना में साधक लाल वस्त्र धारण करें, नीचे लाल धोती पहिनी हुई हो, और लाल धोती ही ऊपर कन्धों पर डाली हुई हो, इसी प्रकार साधिकाएं भी लाल साड़ी और लाल कंचुकी ही धारण करें।

इस साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए पांच दुर्लभ वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिसके माध्यम से यह साधना पूर्ण सिद्ध की जा सकती है।

सूर्यग्रहण की रात्रि को साधक-साधिका लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने तेल का दीपक लगा लें, फिर सामने ही लाल वस्त्र बिछाकर दीपक के आगे ही शृंगाटकी अर्थात् **सियारसिंगी** रख दें और उस पर सिन्दूर का तिलक लगाएं, फिर अपने ललाट पर भी सिन्दूर का तिलक लगाएं, इसके बाद सामने ही **दिगम्बरी दक्षिण काली यन्त्र** और **चित्र** को स्थापित कर दें, और उसके सामने **मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष** एवं **काल यन्त्र** को स्थापित कर इन दोनों पर भी सिन्दूर का तिलक करें।

इसके बाद इन सभी तत्वों का सामूहिक पंच पूजन करें, पंच पूजन में जल, केसर, अक्षत, पुष्प एवं प्रसाद समर्पित करें, पुष्प यथा संभव लाल रंग के ही उपयोग में लाने चाहिए और प्रसाद दूध का बना हुआ किसी भी प्रकार का पदार्थ भोग में रखा जा सकता है।

इस पूरे साधना काल में केवल इक्यावन माला मन्त्र जप करने का विधान है, साधक चाहें तो इससे ज्यादा भी मन्त्र जप संपन्न कर सकते हैं।

दिगम्बरी दक्षिण काली मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्लीं क्लीं दिगम्बरी दक्षिण
कालिके क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं फट् ।।

यह मन्त्र अपने आपमें अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है, साधकों को चाहिए कि वे मन्त्र को गलत लोगों के हाथ में न दें, और कुकर्मी, आलोचक और निन्दक लोगों को भी इस साधना का रहस्य नहीं समझाएं।

इस प्रकार सूर्य ग्रहण की यह साधना साधक के लिए शीघ्र फलदायी सिद्ध होती है, दरिद्रता निवारण, विकार निवारण, पाप दोष निवारण, शक्ति प्राप्ति, शत्रु भय शान्ति हेतु सूर्य ग्रहण साधना सर्वश्रेष्ठ है।

एक बात विशेष रूप से ध्यान रखनी है, कि ग्रहण काल के दौरान सूर्य की ओर नहीं देखना है, ऐसा करने से नेत्रों को हानि पहुंच सकती है, और साथ ही साधनात्मक दोष भी बनता है।

साधना की पूर्णता के पश्चात् चित्र, रुद्राक्ष और काल यन्त्र को पूजा स्थान में ही रख दें, सियारसिंगी साधक को काले कपड़े में बांध कर अपने घर में रुपये पैसे के स्थान पर अर्थात् तिजोरी की जगह रखना चाहिए। ऐसा करने से धन की अभिवृद्धि होती है।

तीन लक्ष्मी यन्त्र

स्वयं निर्माण कर नित्य पूजन करें

जहां यन्त्र का पूजन होता है, और उसके साथ मन्त्र का उच्चारण होता है, तो सफलता निश्चित ही रहती है, केवल अपनी पूर्ण श्रद्धा से यदि कोई नित्य प्रति यन्त्र पूजन करे तो उसे चमत्कारिक अनुभव अवश्य ही होते हैं।

आगे लक्ष्मी साधना से सम्बन्धित तीन यन्त्र दिये जा रहें हैं, इन्हें भोज पत्र पर लिख कर तथा यन्त्र के नीचे ही उसका मन्त्र लिख कर नित्य प्रति अगरबत्ती करने से फल प्राप्ति होती है, साधक यन्त्र को फ्रेम में मढ़ा कर अपने घर में, पूजा स्थान में, कार्यालय में, अपने टेबल की दराज में अथवा टेबल के कांच के नीचे या अपनी दुकान में टांग कर नित्य प्रति पूजा करें तो परिणाम शीघ्र प्राप्त होता है।

अष्टगन्ध से भोज पत्र पर अनार की कलम से लिख कर पहले इसकी पूजा कर लें और फिर जहां भी इसे स्थापित करना हो वहां रखें।

१-श्री महालक्ष्मी सर्वतोभद्र यन्त्र

प्रथम पूजा में गुग्गल का धूप देते हुए १०८ बार मन्त्र जप करना चाहिए, यह यन्त्र जहां भी स्थापित होता है वहां सदैव प्रगति, सुरक्षा एवं समृद्धि रहती है, कुदृष्टि, अभिशाप आदि का दुष्प्रभाव नष्ट होता है।

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	११	२३	४

मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

२-व्यापार वर्धक लक्ष्मी यन्त्र

प्रथम बार पूजन के समय इस यन्त्र की रात्रि में रचना कर धूप, दीप, कुंकुंम केसर से पूजा कर फिर निम्न मन्त्र की ग्यारह माला जप करें, पूरे जप के दौरान घी का अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए। इसके पश्चात् इस यन्त्र को अपनी दुकान अथवा कार्यालय में स्थापित कर दें। इससे निश्चय ही व्यापार में वृद्धि होगी, रुके हुए कार्य सिद्ध होंगे।

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

मन्त्र

॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

३-श्री महालक्ष्मी सम्पुट यन्त्र

श्री महालक्ष्मी सम्पुट यन्त्र तो चमत्कारिक प्रभाव देने वाला ही है, प्रथम पूजा के दिन साधक लाल वस्त्र धारण कर गणेश, लक्ष्मी तथा सरस्वती का ध्यान कर लाल चन्दन, लाल पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पित कर तीनों महाशक्तियों के मन्त्र की एक-एक माला का जप करना चाहिए, तीनों साधनाओं के लिए रुद्राक्ष माला श्रेष्ठ मानी गयी है।

महालक्ष्म्यै				नमः
९	श्रीं			६
ॐ	१	४		ह्रीं
	७	८		
३	क्लीं			२

मन्त्र

गणेश मन्त्र— ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

लक्ष्मी मन्त्र— ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॥

सरस्वती मन्त्र— ॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः ॥

महालक्ष्मी सम्पुट यन्त्र से गणेश कृपा से सुरक्षा, विघ्न नाश प्राप्त होता है, लक्ष्मी कृपा से श्री एव समृद्धि तथा सरस्वती कृपा से शान्ति प्राप्त होती है, इस यन्त्र को अपने घर में प्रमुख स्थान पर अवश्य ही रखना चाहिए तथा नित्य प्रति अगरबत्ती कर तीनों शक्तियों के मन्त्र का उच्चारण अवश्य ही करना चाहिए। ●

卐

श्रीकृष्ण भी जिसकी उपासना करते हैं

जो श्रीकृष्ण की शक्ति है

श्रीराधा महाविद्या साधना

श्री कृष्ण तो छः ऐश्वर्यों से पूर्ण सर्वेश्वर जिनका स्वरूप नारायण है, जो अखिल ब्रह्माण्डों के अधीश्वर हैं, वे कृष्ण भी श्रीराधा की साधना करते हैं और उनकी अधीष्ठात्री देवी है।

श्रीराधा महाविद्या के सम्बन्ध में तो दो प्रामाणिक ग्रन्थ **श्री राधोपनिषद** एवं **नारद पंचरात्र** हैं, जिनमें इस महाशक्ति के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण है।

जब तक मूल शक्ति की साधना नहीं की जाती तब तक साधना में सिद्धि कैसे संभव है ? यह शक्ति ही किसी महापुरुष, देव अथवा साक्षात् भगवान का आधार है, अतः साधक को इस मूल रहस्य को समझते हुए मूल शक्ति की आराधना की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। लेकिन जब तक श्री कृष्ण की शक्ति श्रीराधा महाविद्या की उपासना नहीं की जाती तब तक साधक को कृष्ण भक्ति तथा कृष्ण उपासना में सफलता नहीं मिल सकती। इसी लिए **देवी भागवत** में लिखा है कि ब्रह्मा आदि सम्पूर्ण देवता नित्य प्रसन्न हो भगवती राधा का ध्यान करते हैं क्योंकि यदि श्रीराधा की पूजा न की जाय तो पुरुष भगवान श्रीकृष्ण की पूजा का अनाधिकारी समझा जाता है।

राद्धनोति सकलान् कामांस्तस्मात् राधेति कीर्तिता।

अर्थात् सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करने के कारण इस देवी का नाम "श्रीराधा" हुआ है।

नारद पंचरात्र में श्री नारद द्वारा भगवान शंकर को साधनाओं के संबध में पूछे गये विशेष प्रश्न और उनके द्वारा दिये गये समाधान का विवरण है। उसमें

श्रीराधा के संबंध में लिखा है कि श्रीराधा प्राण की अधिष्ठात्री देवी है।

श्रीराधा विशेष पूज्य और उपास्य इसलिए है कि कृष्ण को जगत् पिता और श्रीराधा को जगत् माता माना गया है और माता तो पिता से सौगुना अधिक वन्द्य होती है। जो कार्य बहुत काल तक श्रीकृष्ण की आराधना के बाद सिद्ध नहीं होता है वह श्रीराधा की उपासना से बहुत शीघ्र सम्पन्न हो जाता है।

श्रीकृष्ण भी जिसकी उपासना करते हैं वह षडक्षरी महाविद्या तो कामधेनु स्वरूपिणी है। इसकी उपासना से बल, पुत्र, लक्ष्मी, भक्ति और ईशित्व की प्राप्ति होती है। श्रीलक्ष्मी तो श्रीराधा की अंश स्वरूपा है, अतः श्रीराधा की उपासना से लक्ष्मी की उपासना अपने आप हो जाती है तथा आह्लादिनी, सन्धिनी, ज्ञान, इच्छा और क्रिया श्रीकृष्ण की शक्तियां हैं और इसमें प्रमुख आह्लादिनी शक्ति है और यही श्रीराधा स्वरूप है।

श्रीराधा शक्ति स्वरूप

राधा रासेश्वरी रम्भा कृष्णमन्त्राधिदेवता।
सर्वथा सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी॥
वृन्दाराध्या रमाशेषगोपीमण्डल पूजिता।
सत्यसत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा॥
वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
गन्धर्वा राधिका रम्भा रुक्मिणी परमेश्वरी॥
परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रविमानना।
भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी॥

१-राधा, २-रासेश्वरी, ३-रम्भा, ४-कृष्णमन्त्राधिदेवता, ५-सर्वाभा, ६-सर्ववन्द्या, ७-वृन्दावनविहारिणी, ८-वृन्दाराध्या, ९-रमा, १०-अशे.गोपीमण्डलपूजिता, ११-सत्या, १२-सत्यपरा, १३-सत्यभामा, १४-श्रीकृष्ण-वल्लभा, १५-वृषभानुसुता, १६-गोपी, १७-मूलप्रकृति, १८-ईश्वरी, १९-गान्धर्वा, २०-राधिका, २१-आरम्या, २२-रुक्मिणी, २३-परमेश्वरी, २४-परात्परतरा, २५-पूर्णा, २६-पूर्णचन्द्र निमानना, २७-भुक्तिमुक्तिप्रदा तथा २८-व्याधि-विनाशिनी।

ये २८ नाम श्रीराधा के २८ स्वरूप हैं, प्रत्येक स्वरूप विशेष शक्ति युक्त है।

कामना पूर्ति साधना

- जिस शक्ति ने योगेश्वर श्रीकृष्ण को भी अपने आधीन कर लिया हो, उस शक्ति की साधना करने से साधक को वशीकरण साधना में सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाती है।

- श्रीराधा प्रेम और आह्लाद की शक्ति है, जीवन में पूर्ण प्रसन्नता, प्रेम, अनुराग की पूर्णता श्रीराधा साधना से ही सम्भव है।

- श्रीराधा सौन्दर्य शक्ति की प्रतीक है. जो स्त्रियां श्रीराधा की साधना करती हैं, उनके सौन्दर्य में अतीव वृद्धि होती है।

- श्रीराधा की उपासना से दाम्पत्य सुख की पूर्णतः प्राप्ति होती है।

- श्रीराधा उपासना से साधक को संतानहीन या पुत्र प्राप्ति के इच्छुक दम्पत्ति को पुत्र की प्राप्ति होती है।

- श्री लक्ष्मी तो राधा की एक शक्ति है, अतः इनकी उपासना से साधक को लक्ष्मी का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

- श्रीराधा शक्ति पूर्णतम जागृति का आधार है, और यह शक्ति स्वरूप में मूलाधार चक्र से जागृत होकर कुण्डलिनी महा शक्ति सहस्रार चक्र में स्थित हो जाती है।

- श्रीराधा उपासना से कृष्ण की उपासना के सारे फल अपने आप प्राप्त होते हैं।

श्रीराधा उपासना

इस महाशक्ति की उपासना स्त्री अथवा पुरुष विवाहित अथवा अविवाहित, कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है क्योंकि इस साधना हेतु केवल दास्य भाव और भक्ति की आवश्यकता है इसकी साधना से तो जीवन में प्रेम और आनन्द की वर्षा होती है।

यह साधना किसी भी बुधवार को प्रारम्भ की जा सकती है, इस साधना हेतु विशेष सामग्री स्वरूप में **श्रीराधा महाविद्या महायन्त्र** जो 'क्लीं' कृष्ण मन्त्रों से आपूरित हो, इसके अलावा **१५ राधा शक्ति चक्र, राधा वशीकरण माला** आवश्यक है।

इसके अलावा पूजन में सफेद पुष्प, चन्दन तथा दुर्वा की व्यवस्था अवश्य कर लेनी चाहिए। साधक तथा साधिका सुन्दर वस्त्र धारण कर यह साधना करें।

यह साधना प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने श्रीकृष्ण और राधा का संयुक्त चित्र स्थापित कर उसके आगे एक थाली के मध्य में सुगन्धित पुष्प रख कर उस पर **श्रीराधा महाविद्या यन्त्र** स्थापित करें इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं (अपना नाम) जीवन की अमुक इच्छाओं की पूर्ति हेतु यह संकल्प लेते हुए यह अनुष्ठान संपन्न कर रहा हूं, कि श्रीराधा षडक्षरी शक्ति मुझ पर प्रसन्न हो, मेरा कार्य पूर्ण हो।

अब हाथ में पुष्प लेकर निम्न स्तोत्र का तीन बार पाठ करते हुए यन्त्र तथा चित्र के मध्य में पुष्प अर्पित करें, चित्र पर चन्दन का टीका लगाएं तथा यन्त्र पर भी चन्दन, दुर्वा अर्पित करें इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्य, नैवेद्य अर्पित करें और सुगन्धित अगरबत्ती लगाएं।

प्रार्थना

नारायणि महामाये विष्णुमाये सनातनि।
प्राणाधिदेवि कृष्णस्य मामुद्धर भवार्णवात्॥
संसारसागरे घोरे भीतं मां शरणागतम्।
प्रपन्नं पतितं मातर्मामुद्धर हरिप्रिये॥

हे नारायणि! विष्णुमाये महामये! सनातनि श्रीकृष्ण प्राणप्रिया, संसार सागर की पीड़ाओं से मेरा उद्धार कीजिए, इस संसार सागर के भय से मुझे मुक्ति प्रदान करें। मेरे जीवन में रस, आनन्द, प्रेम और सुख की वर्षा करें।

पंचादस श्रीराधा दास्य पूजन

राधा की शक्तियां उसके दास्य रूप में निवास करती हैं, और उनकी पुजा करना आवश्यक है। इनमें प्रेम, सौन्दर्य, वशीकरण, लक्ष्मी, शक्ति, सरस्वती सभी गुणों से युक्त अलग-अलग शक्तियां हैं, इस हेतु जो **१५ श्रीराधा शक्ति चक्र** हैं उन्हें चन्दन में डुबो कर क्रमशः इन शक्तियों का ध्यान करते हुए **श्रीराधा महायन्त्र** के आगे स्थापित करें, तथा एक श्रीराधा शक्ति चक्र की स्थापना के बाद एक अगरबत्ती जलाएं, ये १५ शक्तियां हैं—

१-मालती, २-माधवी, ३-रत्नमालावती, ४-चम्पावती, ५-मधुमती, ६-सुशीला, ७-वनमालिका, ८-चन्द्रवली, ९-चन्द्रमुखी, १०-पद्मा, ११-पद्ममुखी, १२-कमला, १३-कालिका, १४-कृष्णप्रिया, १५-विद्याधरी।

इस प्रकार इनका प्रेम सहित पूजन कर **श्रीराधा वशीकरण माला** अपने नेत्रों के तथा मस्तक के लगा कर राधा षडक्षरी महविद्या मन्त्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर सम्पन्न करें।

षडक्षरी महाविद्या मन्त्र

।। रां ॐ आं यं स्वाहा ।।

अब जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाने के पश्चात् श्रीराधा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

श्रीराधा स्तोत्र

राधा रासेश्वरी रम्भा रामा च परमात्मनः।
रासोद्भवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षःस्थलस्थिता ।।
कृष्णप्राणाधिदेवी च महाविष्णोः प्रर्हषिणी।
सर्वथा विष्णुमाया च सत्या नित्या सनातनी ।।
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्त निर्गुणा परा।
वृन्दा वृन्दावने सा च विरजातटवासिनी ।।
गोलोकवासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी ।।
वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा।
काम्या कलावती कन्या तीर्थपूता सती शुभा ।।

जो साधक श्रीराधा के इन ३७ नामों से युक्त स्तोत्र का नित्य प्रति पाठ करता है वह अचल लक्ष्मी सभी सुखों सहित प्राप्त करता है।

स्तोत्र पाठ के पश्चात् राधा कवच अर्थात् परमानन्द संदोह कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिए, जिसके पठन से परमानन्द अर्थात् परम आनन्द की प्राप्ति होती है, **नारद पंचरात्र** में लिखा है कि श्रीकृष्ण ने तो इस कवच को अपने कण्ठ में धारण कर लिया और है, और इसीलिए श्रीकृष्ण को राधा की सभी शक्तियां निर्विघ्न रूप से प्राप्त हैं।

परमानन्द संदोह कवच

सर्वाद्या मे शिरः पातु केशं केशकामिनी।
भालं भगवती लोला लोचनयुग्मकम् ।।
नासां नारायणी पातु सानन्दा चाधरोष्ठकम्।
जिह्वां पातु जगन्माता दन्तं दामोदरप्रिया ।।
कपोलयुग्मं कृष्णेशा कण्ठं कृष्णप्रिया तथा।
कर्णयुग्मं सदा पातु कालिन्दी कूलवासिनी ।।
वसुन्धरेशा वक्षो मे परमा सा पयोधरम्।
पदमनाभप्रिया नाभि जठरं जाह्नवीश्वरी ।।
नित्या नितम्बयुग्मं मे कंकालं कृष्ण सेविता।
परात्परा पातु पृष्ठं सुश्रोणी श्रोणिकायुगम् ।।
परमाया पादयुग्मं नखरांश्च नरोत्तमा।
सर्वांगं मे सदा पातु सर्वेशा सर्वमंगला ।।
पातु रासेश्वरी राधा स्वप्ने जागरणे च माम्।
जले स्थले चान्तरिक्षे सेविता जलशायिनी ।।
प्राच्यां मे सततं पातु परिपूर्णतमप्रिया।
वह्नीश्वरी वह्निकोणे दक्षिणे दुःखनाशिनी ।।
नैर्ऋत्ये सततं पातु नरकार्णवतारिणी।
वारुणे वनमालीशा वायव्यां वायुपूजिता ।।
कौवेरे मां सदा पातु कूर्मेश परिसेविता।
ईशान्यामीश्वरी पातु शतभृंग निवासिनी ।।
वने वनचरी पातु वृन्दावनविनोदिनी।
सर्वत्र सततं पातु सर्वेशा विरजेश्वरी ।।
प्रथमे पूजिता या च कृष्णेन परमात्मना।
षडक्षर्या विजया च सा मां रक्षतु कातरम् ।।

अब श्रीकृष्ण और राधा की आरती सम्पन्न कर साधक प्रणाम कर प्रसाद ग्रहण करें— त्रैलोक्यपावनीं राधां सन्तो सेवन्त नित्यशः **श्रीराधा की साधना से तो इस लोक की तो बात ही क्या तीनों लोक पावन हो जाते हैं, वास्तव में श्रीकृष्ण आराध्य शक्ति षडक्षरी महाविद्या श्रीराधा की साधना, उपासना तो परम सिद्धिप्रदा एवं परमानन्द परम सुखदायिनी है। साधक को श्रीराधा की कृपा का फल नित्य प्रति प्राप्त होता ही रहता है। प्रेम सौन्दर्य की इससे श्रेष्ठ कोई उपासना नहीं है।** ●

तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र

तंत्र महा विज्ञान की जानकारी उसके नियम, उसकी प्रक्रिया, साधना का क्रम जो साधक पूर्ण रूप से समझ लेता है, वह तन्त्र में प्रवीणता प्राप्त कर सकता है। तांत्रिक साधनाओं में न तो जाति का बन्धन है और न ही कर्म का। तन्त्र को मूल रूप से दो भागों में बांटा गया है, प्रथम है- देवी तन्त्र और दूसरा है मिश्र तन्त्र।

देवी तन्त्र की साधना साधक जहां ब्रह्मत्व प्राप्ति की भावना के साथ शुद्ध कार्यों हेतु मानसिक शान्ति तथा पाप एव दोषों के निवारणार्थ सम्पन्न करता है, वहीं मिश्र तंत्र सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जिसमें स्व उन्नति, शारीरिक सुख, अर्थ लाभ, आकस्मिक धन प्राप्ति, भूमि गर्भ धन प्राप्ति, शत्रु को पीड़ा, स्वप्न में फल के साथ-साथ वशीकरण, सम्मोहन, शारीरिक पीड़ा शान्ति सम्मिलित है।

जो अपनी इन्द्रियों को नियन्त्रण में रख सकता है, जो गुरु का सेवक है, जिसके खान-पान में शुद्धता है, जो जीवन में विशेष लालसाओं की पूर्ति करना चाहता है, उसे ही मिश्र तन्त्र की साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए। मिश्र तन्त्र की साधना में कर्ण पिशाचिनी साधना, त्रेटक तन्त्र, अदृश्य विद्या तन्त्र, वशीकरण स्तम्भन तन्त्र हैं परन्तु सबसे महत्वपूर्ण तन्त्र यक्षिणी तन्त्र है, इस यक्षिणी तन्त्र को किंकिणी तन्त्र भी कहा गया है। शिव द्वारा रचित इस वृहद तन्त्र विज्ञान में प्रयोगात्मक साधनात्मक विवरण हैं, जिनका पूर्ण पालन साधक को करना चाहिए।

अथ यक्षिणी (किंकिणी) तन्त्र परिशिष्ट

यक्षिणी साधना के भी कुछ विशेष नियम हैं, और यह साधना ध्यान में तत्पर, लालसा से उत्सुक होकर एकान्त और शान्त जगह पर शान्त चित्त होकर साधना करनी चाहिए।

जो देवी भक्त है, वही इस साधना का अधिकारी है।

जो यज्ञ होमादि को मानता है, उसे शुभ यक्षिणियों की साधना करना चाहिए।

यक्षिणी साधना तीन रूपों में सम्पन्न की जा सकती है— १- माता के रूप में, २- बहन के रूप में, ३- प्रिया के रूप में।

सुसिद्धिप्रदा ३६ यक्षिणियां

१-विचित्रा, २-विभ्रमा, ३-हंसी, ४-भिक्षिणी, ५-जनरंजिका, ६-विशाला, ७-मदना, ८-घण्टा, ९-कालकर्णी, १०-महाभया, ११-माहेन्द्री, १२-शंखिनी, १३-चान्द्री, १४-श्मशानी, १५-वटयक्षिणी, १६-मेखला, १७-विकला, १८-लक्ष्मी, १९-कामिनी, २०-शतपत्रिका, २१-सुलोचना, २२-सुशोभना, २३-कपाली, २४-विलासिनी, २५-नटी, २६-कामेश्वरी, २७-स्वर्णरेखा, २८-सुरसुन्दरी, २९-मनोहरा, ३०-प्रमोदा, ३१-रागिणी, ३२-नखकेशिका, ३३-नेमिनी, ३४-पाद्मनी, ३५-स्वर्णावति, ३६-रतिप्रिया।

मुद्रा

यक्षिणी साधना में आह्वान, विसर्जन, हृदय, मुद्रा, गन्ध पुष्प अर्पण मुद्रा, तथा सबसे प्रमुख क्रोध मुद्रा ये सभी मुद्राएं अलग-अलग हैं। इनका पालन करते हुए ही साधना करनी चाहिए।

आह्वान मुद्रा

हथेली को समतल कर मध्यमा उंगलियों को विपरीत करें, अनामिका को बाहर निकली हुई छोड़ कर तर्जनी को भीतर मुड़ी कनिष्ठिका से अन्दर करें, यह श्रेष्ठतम आह्वान मुद्रा है, इस मुद्रा में बांएं अंगूठे से आह्वान किया जाता है।

आह्वान मन्त्र

।। ॐ ह्लीं आगच्छ (अमुक) यक्षिणी स्वाहा ।।

विसर्जन

साधना के पश्चात् की इसी मुद्रा में विसर्जन किया जाता है।

विसर्जन मन्त्र

।। ॐ ह्लीं गच्छा मूक यक्षिणीशीध्रां पुनरागमनाय स्वाहा ।।

अभिमुखीकरण मुद्रा

आह्वान के पश्चात् इस मुद्रा में मन्त्र जप कर यक्षिणी को अपने सामने बिठाना चाहिए। दोनों हाथों की मुट्ठी बांध कर तर्जनी और मध्यमा उंगलियों को फैलाएं तथा ११ बार मन्त्र पढ़ें—

।। ॐ महायक्षिणी मैथुन प्रिये स्वाहा ।।
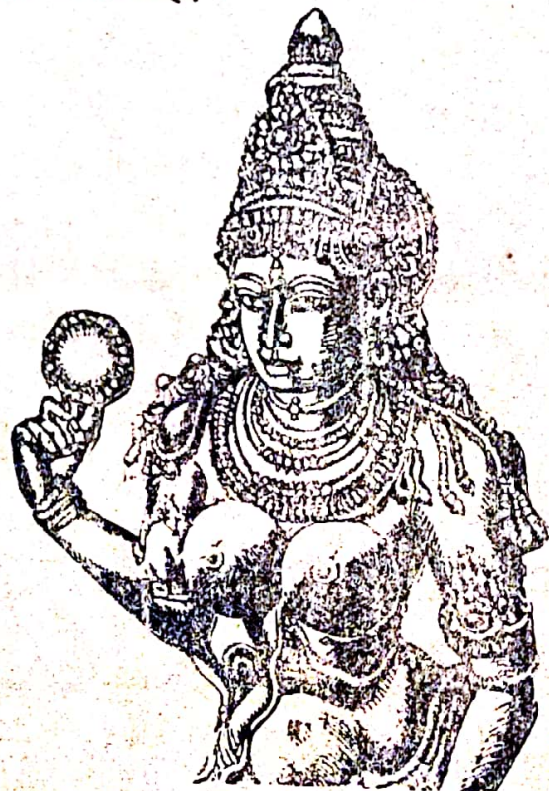
सान्निध्यकरण मुद्रा

यक्षिणी को अपने सान्निध्य में अर्थात् अपने पास बिठाने के लिए इस मुद्रा का प्रयोग कर मन्त्र बोलना चाहिए।

दोनों हाथों की मुठ्ठी बांध कर हाथ आगे कर मुठ्ठी फैलाएं और फिर बांधें, इस मुद्रा के दौरान ही निम्न मन्त्र बोलें—

॥ ॐ कामेश्वरी स्वाहा ॥

"ह्रीं" मन्त्र का सौ बार उच्चारण करते हुए दोनों हाथों को घड़े के आकार में स्थापित कर हृदय मुद्रा बनाएं। इससे यक्षिणी विशेष प्रसन्न होती है।

गन्ध, पुष्प, धूप, दीप को अर्पित कर दोनों हाथों की मुठ्ठी बांध कर तर्जनी तथा मध्यमा को फैलावें तथा निम्न मन्त्र का सौ बार जप करें—

॥ ॐ सर्व मनोहारिणी स्वाहा ॥

इन सब प्रक्रियाओं के पश्चात् क्रोध मुद्रा में यक्षिणी का आकर्षण किया जाता है, इससे यक्षिणी अवश्य ही उपस्थित होती है, दोनों हाथों की मुठ्ठी बांध कर कनिष्ठिकाओं से जोड़ें और तर्जनी को फैला कर मोड़ दें तथा यह प्रतिहत क्रोधांकुश मुद्रा यक्षिणी आकर्षण की विशेष मुद्रा है, इस मुद्रा में क्रोध मन्त्र का एक सहस्त्र (एक हजार) जप करना आवश्यक है —

क्रोध मन्त्र

॥ ॐ जूं कट्टकट्ट अमुक (यक्षिणी नाम) यक्षिणी ह्रीं यः यः हुं फट् ॥

यक्षिणी साधना में प्रत्येक यक्षिणी साधना के लिए उपरोक्त सामान्य विधान के आगे अलग-अलग विधान है, ऊपर लिखे सारे नियमों का तो पालन करना ही है, प्रत्येक यक्षिणी के लिए मन्त्र के साथ-साथ यन्त्र इत्यादि सामग्री और विशेष हवन तथा मन्त्र जप संख्या अलग-अलग है। उन सभी नियमों का पूर्ण पालन अवश्य ही होना चाहिए।

यह ध्यान रहे कि प्रत्येक यक्षिणी केवल एक विशेष सिद्धि से युक्त है और साधना में प्रसन्न होने पर केवल वही एक सिद्धि साधक को दे सकती है, शत्रु बाधा शान्ति प्रदान करने वाली यक्षिणी से वशीकरण सिद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती, इसी प्रकार लक्ष्मी प्रदात्री यक्षिणी से गृहस्थ सुख अथवा सन्तान प्राप्ति वर नहीं मांगा जा सकता। अतः साधक स्वयं निर्णय कर जिस कार्य को सम्पन्न करना चाहते हैं, उसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु यह साधना सम्पन्न करें।

आगे के पृष्ठों में कुछ विशेष यक्षिणियों की साधना, उद्देश्य, फल तथा साधना रहस्य स्पष्ट किया जा रहा है, उसी के अनुसार साधक कार्य कर मनोवांछित फल प्राप्त कर सकता है। केवल आजमाने की दृष्टि से यक्षिणी साधना का कोई भी प्रयोग न करें, यह विशेष ध्यान रखें।

यक्षिणी साधना का जो विधान है, उसमें सभी नियमों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। अब तक जो विवरण लिखा गया है, वह सभी प्रकार की यक्षिणी साधनाओं के लिए करना आवश्यक है, प्रत्येक यक्षिणी एक विशेष शक्ति की स्वामिनी है और उतना ही उसका क्षेत्र है। कुछ यक्षिणियों की साधना निर्जन स्थान में किसी की श्मशान में और किसी की कदम्ब या इमली वृक्ष तले अथवा वट वृक्ष पर बैठ कर की जाती है, कुछ साधनाएं पूर्णिमा के दिन, कुछ साधनाएं अमावस्या के दिन, और कुछ साधनाएं अष्टमी के दिन सम्पन्न की जाती हैं। प्रत्येक साधना हेतु मन्त्र संख्या अलग-अलग है और उसी के अनुसार हवन का भी विधान है।

कुछ यक्षिणी साधनाओं में साधक को विशेष रसायन, कुछ विशेष गुटिका अथवा विशेष अंजन प्राप्त होता है जैसे घण्टा यक्षिणी साधक को अपने वर से वह शक्ति देती है कि वह साधक किसी से भी वैर मोल लेता है और विजयी होता है, इसी प्रकार दृश्य-अदृश्य साधना हेतु मदना यक्षिणी उत्तम है, जिसमें यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को जो गुटिका प्रदान करती है, उससे उसे अदृश्य सिद्धि प्राप्त होती है। महामाया यक्षिणी सिद्ध हो कर प्रसन्न होने पर साधक को ऐसा रसायन प्रदान करती है कि साधक के शरीर पर झुर्रियां तथा पके हुए बाल इत्यादि के दोष दूर हो जाते हैं, और वह पूर्ण निरोग हो जाता है। भूमि में गड़े धन को देखने की शक्ति मदन मेखला यक्षिणी से प्राप्त होती है, तो दूर गमन साधना में सिद्धि सुलोचना यक्षिणी से प्राप्त होती है। कामेश्वरी यक्षिणी साधक को दिव्य अलंकार धन, वस्त्रादि प्रदान करती है, तो सुरसुन्दरी यक्षिणी साधक को राजत्व प्रदान करती है।

यदि साधक मातृ रूप में भावना रखते हुए साधना करता है तो यक्षिणी देवी उसे धन, राजत्व, उत्तम द्रव्य इत्यादि प्रदान करते हुए उसे पुत्र की भांति पालना करती है। भगिनी रूप में साधना करने पर यक्षिणी साधक को कोई दिव्य वस्तु प्रदान करती है तथा साधक का विवाह श्रेष्ठ कन्या के साथ होता है, अपने प्रेम आदि में पूर्ण सफलता मिलती है। यदि प्रिया रूप में साधना करता है, तो साधक को समस्त ऐश्वर्य प्रदान करती है, इसमें यह ध्यान रहे कि साधक यक्षिणी को प्रिया रूप में सिद्ध करने पर अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़ कर किसी अन्य स्त्री के साथ गमन न करें अन्यथा सभी सिद्धियां नष्ट हो जाती हैं।

आगे कुछ विशेष साधनाएं स्पष्ट की जा रही हैं, उसी के अनुसार साधक साधना कर अपने जीवन में सिद्धि का एक नया अध्याय अवश्य जोड़ें।—

वट यक्षिणी साधना

यह साधना सात दिन की है, तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से ही प्रारम्भ की जाती है। पूर्ण विधान के अनुसार मन्त्र जप संख्या २० हजार आवश्यक है। पुरश्चरण दो लाख मन्त्रों का है, पिछले पृष्ठों में दिये गये विधान के अनुसार मुद्रा इत्यादि से यक्षिणी का आह्वान करें, आह्वान में जहां अमुक लिखा है, वहां वट यक्षिणी का प्रयोग करें।

विनियोग

ॐ अस्य यक्षिणीमन्त्रस्य विश्रवाऋषिरनुष्टुप्छन्दः यक्षिणी देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

हाथ में जल लेकर उपरोक्त विनियोग का उच्चारण कर जल भूमि पर छोड़ दें तथा अपनी कामना पूर्ति हेतु संकल्प लें, इस समय यह निश्चित करें कि किस रूप में यक्षिणी की साधना करनी है, उसी के अनुसार मुद्रा बनाएं तथा वही स्वरूप को ध्यान रखते हुए अनुष्ठान करें—

ध्यान मन्त्र

ॐ अरुणाचन्दनवस्त्रविभूषितां सबलतोदयतुल्यतनूरुहाम्।
स्मरकुरंगदृशं वटयक्षिणीं कमुकनागलतादलपुष्कराम्॥

सामग्री

वट यक्षिणी चित्र, काम्य शक्ति मण्डल, वट यक्षिणी यन्त्र, नौ यक्षिणी पीठ शक्ति चक्र अष्ट क्रिया शक्ति चक्र तथा **यक्षिणी माला** के अतिरिक्त धूप, अगरबत्ती, पुष्प, चन्दन, पात्र में जल आवश्यक है।

विधान

सर्वप्रथम यक्षिणी पूजन करें, अपने सामने एक पट्टे पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर **काम्य शक्ति मण्डल** जो कि कागज पर बना है उसे स्थापित करें, चारों कोनों पर चार टीकी लगाएं इसके मध्य में गोल घेरे में **वट यक्षिणी यन्त्र** स्थापित करें, इसके बाहर के घेरे में **नौ पीठ शक्तियों** का आह्वान करते हुए **यक्षिणी पीठ शक्ति चक्र** स्थापित करें—

१-ॐ कामदायै नमः, २-ॐ मदनायै नमः, ३-ॐ नक्तायै नमः, ४-ॐ मधुरायै नमः, ५-ॐ मधुराननायै नमः, ६-ॐ नर्मदायै नमः, ७-ॐ भोगदायै नमः, ८-ॐ नन्दायै नमः, ९-मध्ये ॐ नमः।

अब बाहर के घेरे में वट यक्षिणी **अष्ट क्रिया शक्तियां** एक-एक का आह्वान करते हुए स्थापित करें। ये शक्तियां हैं—

१-ॐ सुनन्दायै नमः, २-ॐ चन्द्रिकायै नमः, ३-ॐ हासायै नमः, ४-ॐ सुपालायै नमः,
५-ॐ मद विह्वलायै नमः, ६-ॐ आमोदायै नमः, ७-ॐ प्रमोदायै नमः, ८-ॐ वसुदेवायै नमः।

वट यक्षिणी चित्र साधक के नेत्रों के सामने होना चाहिए उसके नेत्रों में अपने नेत्र डालते हुए मन्त्र जप करना है।

यदि सुविधा हो तो बरगद वृक्ष के नीचे मन्त्र जप किया जा सकता है, अन्यथा साधना के समय बरगद के पत्ते नित्य नवीन अपने पूजा स्थान में अवश्य ला कर रखें—

मन्त्र

।। एह्येहि यक्षि यक्षि महाविद्या वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।।

जब सात दिन बीत जाते हैं तो आठवें दिन अर्द्ध रात्रि के पश्चात् नूपुर अर्थात् पायल की ध्वनि सुनाई देती है, साधक उस समय भय रहित होकर वट यक्षिणी चित्र के नेत्रों में देखता हुआ, मन्त्र जप करता रहे।

जब यक्षिणी साक्षात् उपस्थित हो तो जिस रूप में कामना की है, उसी रूप में उसकी पूजा कर अपनी कामना प्राप्ति का वर मांगें।

नित्य साधना के बाद जल बरगद वृक्ष में डाल देना चाहिए, यह साधना निश्चय ही यक्षिणी द्वारा साधक को दिव्य वस्त्र तथा सिद्ध रसायन और अलंकार प्रदान करने वाली है। यक्षिणी के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

नटी यक्षिणी साधना

यह साधना विशेष प्रकार की साधना है और विश्वामित्र ऋषि ने इस साधना को बला और अति बला विद्या कहा है, इसमें यक्षिणी के नर्तकी के रूप की साधना की जाती है।

विनियोग

ॐअस्य नटी यक्षिणीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः बला अतिबला देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

हाथ में जल लेकर संकल्प लेकर जल भूमि पर छोड़ दें और साधना में यक्षिणी का स्वरूप निश्चित कर उसी रूप में प्रार्थना करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ त्रैलोक्य मोहिनीं गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकीवेषधारिणीम् ।।

सामग्री

नटी यक्षिणी चित्र, बला विद्या तांत्रोक्त फल, अतिबला विद्या तांत्रोक्त फल, चन्दन माला, इसके अतिरिक्त साधक अशोक वृक्ष के पत्ते, गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीप (घृत) की व्यवस्था भी अवश्य कर लें।

विधान

यह साधना किसी भी पूर्णिमा से अर्द्ध रात्रि को प्रारम्भ कर अगली पूर्णिमा की अर्द्ध रात्रि को ही पूर्ण की जाती है अर्थात् एक माह तक पूजा विधान है। प्रतिदिन एक सहस्र अर्थात् एक हजार मन्त्र जप करना है, अपने सामने एक बाजोट पर लाल कढ़ाई युक्त चुनरी बिछा कर चन्दन से एक गोल घेरा बना कर तीन अशोक वृक्ष के पत्ते रखें, मध्य में एक सुगन्धित पुष्प का आसन देकर **नटी यक्षिणी यन्त्र** स्थापित करें। बांई ओर **बला**

विद्या तांत्रोक्त फल स्थापित करें तथा दाहिनी ओर **अतिबला विद्या तांत्रोक्त फल** स्थापित करें। रात्रि में ही भोजन कर पूजन करना चाहिए। कुंकुम, गुलाल अबीर, अक्षत, अगरबत्ती से तीनों का पूजन कर घी का दीपक जलाएं, रात्रि में जितने समय तक मन्त्र जप करें उतने समय तक घी का दीपक जलते रहना चाहिए। प्रतिदिन नटी यक्षिणी देवी का इसी प्रकार पूजन करते हुए मन्त्र जप करना चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवती स्वाहा ॥

साधना सही दिशा में जा रही है, इसका आभास इस रूप में होता है कि अर्द्ध रात्रि के पश्चात् देवी कुछ भय देकर परीक्षा लेती है, यदि साधक निश्चिन्त रूप से सुदृढ़ होकर नियमित साधना करता रहता है, तो एक माह के पश्चात् नटी यक्षिणी समस्त विद्याओं से युक्त उपस्थित होती है और मुस्कुराहट के साथ कहती है कि **जो तुम्हारे मन में है वह वर मांग लो।**

श्रेष्ठ साधक इसे सुन कर जिस भावना अर्थात् माता, बहिन या प्रिया की भावना से साधना की हो उसी रूप में उसे उत्तर दें और सन्तुष्ट करें। माता रूप में यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को सिद्धि द्रव्य तथा ज्ञान देती है जिससे वह अतीत और अनागत सभी बातों का ज्ञान रखने योग्य हो जाता है। प्रिया रूप में वह साधक को धन प्रदान करती है, बहिन रूप में वह साधक के जीवन की विशेष इच्छाओं की पूर्ति का आशीर्वाद प्रदान करती है।

एक माह के पश्चात् साधक को अपनी सभी सामग्री उसी कपड़े में बांध कर ऐसी जगह रख देनी चाहिए जहां किसी की दृष्टि न पड़े।

एक बार सिद्धि प्राप्त होने पर जब भी साधक मंत्रोच्चारण कर यक्षिणी का आह्वान करता है तो वह तत्काल उपस्थित होती है, इसमें सन्देह करने वाला अथवा अज्ञानता वश परीक्षा लेने वाला साधक पीड़ाओं को ही प्राप्त करता है। ✶

सुर सुन्दरी यक्षिणी साधना

यह साधना भैरव द्वारा प्रदान की गयी है, राजत्व प्राप्ति अर्थात् नौकरी में सफलता, प्रमोशन, राजकीय कार्यों में बाधा के निवारण हेतु अर्थात् वर्तमान समय में सरकारी दृष्टि से रुके हुए कार्य जैसे—इन्कम टैक्स सेल्स टैक्स सम्बन्धी परेशानी, सरकारी ऋण, ऐसा अन्य कोई भी कार्य जिसमें सरकारी अधिकारियों से कार्य पड़ता हो एवं बाधा उत्पन्न होती हो तो यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

ध्यान

पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञानभयप्रदाम्॥

विनियोग

ॐ अस्य श्री सुर सुन्दरी साधनं दुर्वासा ऋषिरनुष्टुप्छन्दः उन्मत्त भैरव देवता मम अभीष्टकार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

सामग्री

इस साधना में लिंग पूजा का विशेष विधान है, अतः यक्षिणी एकलिंग, तांत्रोक्त तीन कार्य सिद्धि रुद्राक्ष सुर सुन्दरी यन्त्र, चित्र आवश्यक है, इसके अतिरिक्त पूजन में धूप, दीप नैवेद्य, गन्ध, चन्दन, कपूर, सुपारी की भी आवश्यकता रहती है।

विधान

अष्टमी के दिन प्रारम्भ की जाने वाली यह साधना प्रातः प्रारम्भ कर सर्वप्रथम अपना दैनिक पूजन कर जल आचमन कर एक माला "ॐ सहस्रार हुं फट्" मन्त्र से दिग्बन्धन करें, साधक पीले वस्त्र धारण कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर अपने सामने सारी सामग्री रख कर पूजन व साधना प्रारम्भ करें।

हाथ में जल लेकर दरिद्रता निवारण हेतु प्रार्थना कर दृढ़ मन से पूरा विधान संकल्प कर ध्यान मन्त्र का उच्चारण करते हुए जिस प्रकार की भावना हो अर्थात् माता, बहन या प्रिया, उसी के अनुसार निवेदन करें। पूजन में सर्वप्रथम यन्त्र एवं चित्र की पूजा चन्दन तथा गन्ध से करें, एक ओर दीपक तथा दूसरी ओर धूप जलाएं, चित्र के आगे चांदी के वर्क में लिपटा पान का बीड़ा तथा नैवेद्य अर्पित करें। रात्रि के समय मन्त्र जप प्रारम्भ करें, यह अनुष्ठान अष्टमी से प्रारम्भ कर नित्य एक हजार मन्त्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है। साधक को साधना काल के दौरान भूमि शयन तथा नमक खटाई रहित भोजन करना चाहिए। सामने जो यक्षिणी एकलिंग स्थापित है उसका भी पूजन चन्दन से करना चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं आगच्छ सुर सुन्दरि स्वाहा ॥

नित्य नवीन धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन कर इस मन्त्र का जप करना आवश्यक है, कुछ साधकों को एक सप्ताह, कुछ को एक पक्ष और कुछ को एक माह में सफलता मिलती है। साधना में जब सफलता प्राप्त होती है तो यक्षिणी सुर सुन्दरी उपस्थित होती है, उस समय उसे जल का अर्घ्य अर्पित करें, तब यक्षिणी की ओर से प्रश्न आता है— "दत्यार्घ्यं प्रणयं मन्त्रो कृतो सा त्वं किमिच्छसि" (हे प्रिय साधक तू क्या चाहता है)। तब साधक को उत्तर देना चाहिए— "देवि दारिद्रयदग्धोस्मि तन्मे नाशय नाशय" (हे देवी मैं दरिद्रता की अग्नि में जल रहा हूं उसे नष्ट करो नष्ट करो)। तब सुर सुन्दरी सन्तुष्ट होकर साधक को दिव्य धन धान्य एवं दीर्घायु प्रदान करती है।

साधक जिस भावना से साधना करता है सुर सुन्दरी यक्षिणी उसी रूप में पालना करती है, उन्मत्त भैरव कहते हैं कि सुर सुन्दरी साधना से तो साधक मन में जो भाव लायेगा उसी के अनुसार फल प्राप्त होगा। इस साधना में सिद्धि से साधक राजत्व प्राप्त करता है, पूर्ण सिद्धि प्राप्त साधक तो स्वयं राजा के समान बन जाता है। ●

यक्षिणी साधना के तीनों प्रयोग साधक को एक-एक कर अवश्य सम्पन्न करने चाहिए, जिसने इन उत्तम साधनाओं को नहीं सम्पन्न किया उसका जीवन तो निश्चय ही व्यर्थ है।

॥ इति यक्षिणी साधनम् ॥

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना नाम	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
चन्द्र ग्रहण प्रयोग	६	—	—
—१- शत्रु बाधा शान्ति प्रयोग	११	अपराजिता यन्त्र	६०) रु०
		शंख माला	१२०) रु०
		सियारसिंगी	५१) रु०
—२- सम्मोहन वशीकरण प्रयोग	११	सम्मोहन यन्त्र	७५) रु०
		वशीकरण यन्त्र	१२०) रु०
		सम्मोहन माला	१२०) रु०
—३-उदर रोग सिर दर्द हरण प्रयोग	१२	दिव्य शक्ति रोग हरण यन्त्र	६५) रु०
—४- अनंग सुख प्रयोग	१२	सोलह कामबीज	६०) रु०
		चन्द्राक्षी अनंग क्लीं यन्त्र	१५०) रु०
		रति माला	१५०) रु०
धूमावती प्रयोग	१३	धूमावती यन्त्र	२४०) रु०
		सफेद हकीक माला	११०) रु०
तांत्रोक्त तारा साधना	१८	सूर्य ग्रहण तारा पैकेट	२८०) रु०
लक्ष्मी का एक अद्भुत तन्त्र	२१	श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यन्त्र	१५०) रु०
		कमलगट्टा माला	६०) रु०
दिगम्बरी दक्षिण काली साधना	२३	साधना पैकेट	३००) रु०
श्रीराधा महाविद्या साधना	२६	साधना पैकेट	२१०) रु०
वट यक्षिणी साधना	३७	साधना पैकेट	२००) रु०
नटी यक्षिणी साधना	३८	साधना पैकेट	२००) रु०
सुर सुन्दरी यक्षिणी साधना	३०	साधना पैकेट	२००) रु०

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७

देवतायाः दर्शनं च करुणा वरुणालयम् ।
सर्व सिद्धि प्रदातारं, श्रीगुरुं प्रणमाम्यहम् ।।

अकारण करुण, समस्त देवताओं को प्रत्यक्ष करने वाले, सभी सिद्धियों के दाता श्री गुरुदेव को मैं सविनय प्रणाम करता हूं ।

श्री गुरुदेव द्वारा प्रदत्त

संकट निवारण आज्ञा चक्र जागरण दीक्षा

(गुरुवार १८ जून १९९२ को)

प्रत्येक साधक अपने घर में बैठ कर यह सबीज दीक्षा ग्रहण करें, समय-प्रातः ५ बजकर ४२ मिनट से ९ बज कर ३६ मिनट तक । सद्गुरुदेव आज्ञा चक्र जागरण पूजन आवश्यक है ।

सद्गुरुदेव सम्पूर्ण पूजन, सात विशिष्ट सामग्रियां जिनसे तीन घण्टे का यह अनुष्ठान पूरा करना है ।

प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान कर नित्य का दैनिक पूजन पूर्ण कर शुद्ध आसन बिछाकर श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में प्रातः ५ बज कर ४२ मिनट पर बैठ जांय, सर्वप्रथम ग्यारह बार 'ॐ' ध्वनि का नाद जितना लम्बा खींच सकें उतना लम्बा ग्यारह बार उच्चारण करें ।

संकट निवारण आज्ञा चक्र जागरण दीक्षा पैकेट में प्राप्त सातों वस्तुओं को सामने रख कर गुरु यन्त्र चित्र का पूजन करें, सात अगरबत्तियां तथा एक दीपक जलाएं सीधे होकर बैठें, मस्तक पर बांयां हाथ रखें तथा दाहिना हाथ हृदय पर रख कर गुरु मन्त्र का पाठ प्रारम्भ करें ।

एक सुमधुर ध्वनि, सुमधुर संगीत गन्ध आपके पूजा स्थान में प्रवाहित होगी, यह गुरुदेव के आगमन का संकेत है, ललाट के मध्य बिन्दु पर एक दबाव अनुभव होगा, पीड़ा नेत्रों से आंसुओं के माध्यम से प्रवाहित होगी जिसे न रोकें, बस केवल गुरु मन्त्र का उच्चारण करते रहें बाकी सब बातें भूल जांय

एक प्रकाश चक्र रूप में जागृत होगा, गुरु आज्ञा प्राप्त होगी, अपने आप को भूल कर सब कुछ गुरु चरणों में सौंप दें, एक नयी शक्ति का आगमन होगा । ९ बज कर ३६ मिनट पर मन्त्र जप पूर्ण कर गुरुदेव को दण्डवत् प्रणाम कर थोड़ी देर शान्त भाव से वहीं बैठ जांय ।

"न भूतो न भविष्यति" ऐसी अद्भुत दीक्षा शिष्यों को न तो अब तक प्राप्त हुई है न आगे ऐसा योग बनेगा ।

"सप्तकलात्मक संकट निवारण आज्ञा चक्र जागरण दीक्षा पैकेट" गुरु शक्ति पीठ जोधपुर से समय रहते १५०)रु० धनराशि भेज कर प्राप्त कर लें—हर साधक शिष्य को यह अनुष्ठान करना ही है । ✱